

अपठित बोध

अध्याय — 1 अपठित गद्यांश



स्मरणीय बिंदु

- अपठित गद्यांश वह गद्य खण्ड है जो पहले पढ़ा न गया हो। किसी भी गद्य खण्ड को पढ़कर स्वयं समझने और उसके अन्तर्गत पूछे गए प्रश्नों के उत्तर स्वयं दे पाने की क्षमता का विकास करना ही अपठित गद्यांश को पाठ्यक्रम में रखने का उद्देश्य होता है।

सामान्य सुझाव

- अपठित गद्यांश के प्रश्नों को हल करने के लिए सर्वप्रथम सम्पूर्ण गद्यांश को कम-से-कम दो बार ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए।
- गद्यांश को एकाग्रता से पढ़ने के बाद उसके मूलभाव को समझना चाहिए तथा उसके बाद प्रश्नों के उत्तरों में से एक सही विकल्प चुनना चाहिए।
- गद्यांश का शीर्षक लिखते समय पूरे गद्यांश के भाव को ध्यान में रखना चाहिए, किसी एक भाव को नहीं।
- अपठित गद्यांश के शीर्षक का चयन, सार्थक एवं मूल-भाव को व्यक्त करने की क्षमता रखने वाला शब्द या शब्द समूह अथवा वाक्यांश का सही उत्तर चुनना चाहिए।

व्यावहारिक व्याकरण

अध्याय — 1 शब्द और पद



स्मरणीय बिंदु

शब्द—वर्णों के सार्थक मेल को शब्द कहते हैं; जैसे—सुपुत्र, निरादर, असंभव आदि। मूल रूप में अर्थ के आधार पर शब्द दो तरह के होते हैं—सार्थक और निरर्थक। शब्द तभी सार्थक होते हैं जब उनका अर्थ होता है, बिना अर्थ वाले शब्द निरर्थक शब्द कहलाते हैं। व्याकरण में निरर्थक शब्दों का अध्ययन नहीं किया जाता है।

जैसे— क् + अ + म् + अ + ल् + अ = कमल

च् + अ + र् + अ + ख् + आ = चरखा

(iii) शब्द का प्रयोग स्वतंत्र रूप से होता है।

शब्द के भेद

(i) अर्थ के आधार पर शब्द के दो भेद हैं—

(क) सार्थक

जैसे—कमल, घोड़ा मटर

(ख) निरर्थक

जैसे—लकम, ऽयो, टमर

(ii) उत्पत्ति के आधार पर शब्द के चार भेद हैं—

(क) तत्सम

जैसे—अग्नि, क्षेत्र, रात्रि

(ख) तद्भव

जैसे—आग, खेत, रात

(ग) देशज

जैसे—पगड़ी, थैला, गाड़ी

(i) शब्द वर्णों के मेल से बनते हैं।

(ii) शब्द वर्णों का सार्थक समूह होते हैं।

(घ) आगत

जैसे—कॉलेज, औलाद, पुलिस

(iii) बनावट के आधार पर शब्द के तीन भेद हैं—

(क) रूढ़

जैसे—जल, घोड़ा

(ख) यौगिक

जैसे—पुस्तकालय, हिमालय

(ग) योगरूढ़

जैसे—पंकज, दशानन

(iv) प्रयोग (विकार) के आधार पर शब्द के दो भेद हैं—

(क) विकारी—विकारी शब्द के चार भेद होते हैं—

- (i) संज्ञा, (ii) सर्वनाम, (iii) विशेषण, (iv) क्रिया
(ख) अविकारी—अविकारी शब्द के भी चार भेद होते हैं—
(i) क्रिया विशेषण, (ii) संबंधबोधक,
(iii) समुच्चयबोधक, (iv) विस्मयादिबोधक।

पद—जब शब्द स्वतंत्र न रहकर व्याकरण के नियमों में बँध जाता है तब वह पद बन जाता है। इस प्रकार वाक्य में प्रयुक्त शब्द ही पद कहलाता है। कारक, वचन, लिंग, पुरुष इत्यादि में बँधकर शब्द पद बन जाता है।

जैसे— सीता नाचती है।

मोहन बाजार जाता है।

सीता और मोहन आदि शब्द वाक्य में प्रयोग किए जाने पर पद में बदल गए हैं।

शब्द और पद में अंतर

	शब्द	पद
1.	शब्द सार्थक और निरर्थक दोनों होते हैं।	पद वाक्य में अर्थ का संकेत देते हैं।
2.	शब्द का केवल अर्थ परिचय होता है।	पद का व्याकरणिक परिचय होता है।
3.	शब्द का वचन, लिंग, क्रिया, कारक से किसी भी प्रकार का सम्बन्ध नहीं होता।	पद का लिंग, वचन, कारक, क्रिया से सम्बन्ध होता है।

अध्याय — 2 अनुस्वार तथा अनुनासिक



स्मरणीय बिंदु

अनुस्वार (ँ)

अनुस्वार का अर्थ होता है—स्वर के बाद आने वाला। अनुस्वार एक व्यंजन ध्वनि है। इसके उच्चारण में नासिका से अधिक साँस निकलती है, मुख से कम; उदाहरणतया—पंजाब, अंग, पंच, गंगा आदि। अनुस्वार की ध्वनि लेखन के स्तर पर अनुस्वार चिह्न (ँ) के द्वारा प्रयुक्त होती है।

शब्द के मध्य में अनुस्वार, अपने परवर्ती व्यंजन वर्ग के नासिक्य व्यंजन (पंचमाक्षर) यानि ङ्, ज्ञ्, ण्, न् तथा म् के स्थान पर (ँ) प्रयोग किया जाता है। जैसे—

- क वर्ग — ङ् = रंग (रङ्ग) पंकज (पङ्कज)
च वर्ग — ज्ञ् = मंच (मञ्च) चंचल (चञ्चल)
ट वर्ग — ण् = पंडित (पण्डित) खंड (खण्ड)
त वर्ग — न् = हिंदी (हिन्दी) शांत (शान्त)
प वर्ग — म् = कंपन (कम्पन) अंबा (अम्बा)

श, ष, स, ह के पूर्व पंचमाक्षर का नहीं, (ँ) बिन्दु का प्रयोग होता है तथा 'सम्' उपसर्ग के बाद जो शब्द अंतस्थ (य, र, ल, व) या ऊष्म वर्णों (श, ष, स, ह) से प्रारम्भ होते हैं तो म् निश्चित रूप से अनुस्वार हो जाता है;

जैसे—सम् + वाद = संवाद, सम् + यंत्र = संयंत्र

अनुनासिक (ं)

जब हम कुछ उच्चारण करते हैं तो उस समय जब हवा मुँह और नासिका दोनों से निकले, तो उस वर्ण के ऊपर चंद्र बिन्दु (ं) लगाया जाता है, उसे अनुनासिक भी कहते हैं। अनुनासिक ध्वनि के उच्चारण में नाक से कम और मुँह से अधिक साँस निकलती है; जैसे—हँसी, आँसू, अँगोछा आदि।

अनुनासिक स्वर का गुण अनुस्वार अनुनासिक्य व्यंजन का रूप है। यही इन दोनों में मूल अंतर है लेकिन यदि शिरोरेखा के ऊपर मात्रा के साथ चन्द्रबिन्दु की जगह (ँ) बिन्दु आए तो वहाँ बिन्दु (ं) अनुस्वार के स्थान पर अनुनासिक मानी जाती है। जैसे—कँची, चींटी आदि। इसका प्रयोग सभी स्वरों के साथ हो सकता है।

अध्याय — 3 उपसर्ग और प्रत्यय



स्मरणीय बिंदु

उपसर्ग—वे शब्दांश जो किसी शब्द के पहले लगकर शब्द का अर्थ परिवर्तित कर देते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं।

उदाहरण—उपकार = उप + कार, अपकार = अप + कार, विकार = वि + कार। यहाँ उप, अप, वि उपसर्ग हैं। हिंदी भाषा में संस्कृत, हिंदी, उर्दू, फ़ारसी, अरबी आदि अनेक भाषाओं के उपसर्ग प्रचलित हैं। इस समय हिंदी में प्रयुक्त होने वाले उपसर्गों की संख्या निश्चित नहीं है।

विशेष—

- उपसर्ग का प्रयोग शब्दांश के रूप में होता है।
- उपसर्ग का प्रयोग स्वतंत्र रूप से नहीं होता।
- उपसर्ग शब्द के आरम्भ में जुड़कर नवीन शब्द का निर्माण करते हैं।

जैसे—हार एक मूल शब्द है जिसके सामान्यतः दो अर्थ लिए जा सकते हैं—माला और पराजय। किन्तु उपसर्गों के योग से 'हार' शब्द से अनेक नए शब्दों का निर्माण किया जा सकता है। जैसे—विहार, प्रहार, आहार, उपहार, संहार। हिंदी भाषा में उपसर्ग तीन प्रकार के हैं—

(1) तत्सम उपसर्ग—जो उपसर्ग संस्कृत भाषा से अपने मूलरूप में हिंदी में आए हैं, उन्हें तत्सम उपसर्ग कहते हैं। जैसे—आ, अव, अति, अधि, अनु, अप, अभि, उप, उत्, दुर, दुस्, निर्, नि, परा, परि, प्र, प्रति, वि, सम्, सु, सत्, सह, स्व। जैसे—

उपसर्ग	मूलशब्द	नवीन शब्द
आ	+ जन्म	= आजन्म
अव	+ गुण	= अवगुण
अति	+ रिक्त	= अतिरिक्त
अधि	+ वक्ता	= अधिवक्ता
अनु	+ मान	= अनुमान
प्रति	+ दिन	= प्रतिदिन
सह	+ चर	= सहचर
स्व	+ जन	= स्वजन

(2) तद्भव उपसर्ग—ये उपसर्ग मूलतः संस्कृत (तत्सम) उपसर्गों से ही विकसित हुए हैं। ये ही हिंदी उपसर्ग कहलाते हैं। जैसे—अ, अन, उन, कु, नि, पर, स, सु, अध, भर, चौ।

जैसे—

उपसर्ग	मूलशब्द	नवीन शब्द
अ	+ छूत	= अछूत
दुः	+ साध्य	= दुस्साध्य
भर	+ पेट	= भरपेट
पर	+ हित	= परहित
अध	+ खुला	= अधखुला
चौ	+ पाल	= चौपाल
स	+ कुशल	= सकुशल
उन	+ सठ	= उनसठ

(3) आगत उपसर्ग—ये उपसर्ग विदेशी भाषाओं (उर्दू, फ़ारसी) से हिंदी में आए हैं। जैसे—ब, बा, बे, बद, खुश, ना, ला, गैर, हम, हर, (विदेशी) दर, सर, कम। जैसे—

उपसर्ग	मूलशब्द	नवीन शब्द
बा	+ अदब	= बाअदब
बद	+ तमीज़	= बदतमीज़
ना	+ पसंद	= नापसंद

ला	+	वारिस	=	लावारिस
खुश	+	नसीब	=	खुशनसीब
गैर	+	हाज़िर	=	गैरहाज़िर
हम	+	राह	=	हमराह
सर	+	पंच	=	सरपंच

प्रत्यय



स्मरणीय बिंदु

वे शब्दांश जो शब्द या धातु के अंत में जुड़कर यौगिक शब्द बनाते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं। यथा—समझदार, सुंदरता। इन शब्दों में 'समझ' व 'सुंदर' मूल शब्द हैं और इनके अंत में क्रमशः 'दार' व 'ता' शब्दांश जुड़े हैं, वे प्रत्यय हैं। प्रत्यय के दो भेद होते हैं—

(1) कृत प्रत्यय, (2) तद्धित प्रत्यय।

विशेष— (i) प्रत्यय अविकारी शब्द हैं।

(ii) प्रत्यय का अपना कोई विशेष अर्थ नहीं होता है।

(iii) प्रत्यय का प्रयोग स्वतंत्र रूप से नहीं होता है।

(iv) प्रत्यय शब्द के अंत में लग कर अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं।

प्रत्यय मूल रूप से दो प्रकार के होते हैं—

(1) **कृत प्रत्यय**—जो प्रत्यय क्रिया के मूल (धातु) रूप के साथ लग कर संज्ञा अथवा विशेषण शब्दों का निर्माण करते हैं वे 'कृत' प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे—

मूलशब्द	प्रत्यय	नवीन शब्द
दौड़	+ ना	= दौड़ना
तैर	+ आक	= तैराक
पूज	+ अनीय	= पूजनीय
पढ़	+ आ	= पढ़ा
पहन	+ आवा	= पहनावा

प्रमुख कृत प्रत्यय—वाला, अक्कड़, वैया, क, आलु, हार, आकू, इयल, आन, आवट, अनीय, आवा, आहट, आई, औना, आस, आ।

(2) **तद्धित प्रत्यय**—जो प्रत्यय सदैव संज्ञा, सर्वनाम व विशेषण के साथ जुड़ते हैं वे तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे—

मूलशब्द	प्रत्यय	नवीन शब्द
गरीब	+ ई	= गरीबी
कला	+ कार	= कलाकार
भूगोल	+ इक	= भौगोलिक
सती	+ त्व	= सतीत्व
नमक	+ ईन	= नमकीन

प्रमुख तद्धित प्रत्यय—मान, वान, इक, ईला, ई, आई, आपा, त्व, हारा, एरा, ईय, आन, आस, आहट, आनी, पन, तन, ईन, इया, इन।

उपसर्ग व प्रत्यय का एक साथ प्रयोग—

जैसे— **उपसर्ग + मूलशब्द + प्रत्यय = नवीन शब्द**

बे	+	चैन	+	ई	=	बेचैनी
अभि	+	मान	+	ई	=	अभिमानि
अ	+	समाज	+	इक	=	असामाजिक
अप	+	मान	+	इत	=	अपमानित
उप	+	कार	+	ई	=	उपकारी

अध्याय — 4 स्वर सन्धि



स्मरणीय बिंदु

सन्धि—‘सन्धि’ शब्द का अर्थ है—मेल या मेल-मिलाप। “दो वर्णों के परस्पर मेल से ध्वनि या व्यक्तियों में होने वाले परिवर्तन को सन्धि कहते हैं।”

जैसे—पुस्तक + आलय = पुस्तकालय (अ + आय = आ), रमा, + ईश = रमेश (आ + ई = ऐ)

सन्धि विच्छेद—सन्धि के नियमों द्वारा निर्मित वर्णों को उनकी पूर्वावस्था में लाना सन्धि विच्छेद कहलाता है।

जैसे—गिरिश = गिरि + ईश, इत्यादि = इति + आदि, स्वागत = सु + आगत।

सन्धि के प्रकार—सन्धि के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं—

1. स्वर सन्धि
2. व्यंजन सन्धि
3. विसर्ग सन्धि।

(1) स्वर सन्धि—दो स्वरों के पारस्परिक मेल से उनमें जो परिवर्तन होता है, उसे स्वर सन्धि कहते हैं।

जैसे—हिम + आलय में अ + आ के मेल से ‘आ’ हो गया—हिमालय।

स्वर सन्धि के पाँच भेद होते हैं—

- (क) दीर्घ सन्धि
- (ख) गुण सन्धि
- (ग) यण सन्धि
- (घ) वृद्धि सन्धि
- (ङ) अयादि सन्धि।

(क) दीर्घ सन्धि—जब ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ के बाद क्रमशः ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ आएँ तो मिलकर दीर्घ या, ई, ऊ हो जाते हैं। इस सन्धि का परिणाम दीर्घ स्वर होता है, अतः इसे दीर्घ सन्धि कहते हैं।

- | | |
|-----------------|-----------------------------|
| (i) अ + अ = आ | परम + अर्थ = परमार्थ |
| अ + आ = आ | देव + आलय = देवालय |
| आ + अ = आ | विद्या + अर्थी = विद्यार्थी |
| आ + आ = आ | महा + आत्मा = महात्मा |
| (ii) ई + इ = ई | मुनि + इन्द्र = मुनीन्द्र |
| इ + ई = ई | गिरि + ईश = गिरिश |
| ई + इ = ई | मही + इन्द्र = महीन्द्र |
| ई + ई = ई | नदी + ईश = नदीश |
| (iii) उ + उ = ऊ | सु + उक्ति = सूक्ति |
| उ + ऊ = ऊ | लघु + ऊर्मि = लघूर्मि |
| ऊ + उ = ऊ | वधू + उत्सव = वधुत्सव |
| ऊ + ऊ = ऊ | वधू + ऊर्जा = वधूर्जा |

(ख) गुण सन्धि—अ और आ के बाद यदि ह्रस्व या दीर्घ इ, ई, उ, ऊ या ऋ आयेँ तो दोनों के स्थान पर क्रमशः ए, ओर और अर् हो जाता है। संस्कृत व्याकरण में अ, आ, ए को ‘गुण’ कहते हैं, इसलिए यह नाम पड़ा है। जैसे—

- | | |
|---------------|--------------------------|
| (i) अ + ई = ए | सुर + इन्द्र = सुरेन्द्र |
| अ + ई = ए | नर + ईश = नरेश |
| आ + ई = ए | महा + इन्द्र = महेन्द्र |

- | | |
|-------------------|-------------------------|
| आ + ई = ए | रमा + ईश = रमेश |
| (ii) अ + ऊ = ओ | पर + उपकार = परोपकार |
| आ + उ = ए | जल + ऊर्मि = जलोर्मि |
| आ + ऊ = ए | महा + उत्सव = महोत्सव |
| आ + ऊ = ए | गंगा + ऊर्मि = गंगोर्मि |
| (iii) अ + ऋ = अर् | देव + ऋषि = देवर्षि |
| आ + ऋ = अर् | महा + ऋषि = महर्षि |

(ग) वृद्धि सन्धि—जब अ, आ के बाद ए, ए या ओ, स्वर आएँ तो दोनों के स्थान पर क्रमशः 'ए' और 'औ' हो जाते हैं। संस्कृत व्याकरण में ए, औ को 'वृद्धि' कहते हैं। अतः यह नाम पड़ा है जैसे—

- | | |
|----------------|---------------------------|
| (i) ए + ए = ए | एक + एक = एकैक |
| ए + ए = ऐ | मत + ऐक्य = मतैक्य |
| आ + ए = ए | सदा + एव = सदैव |
| आ + ऐ = ए | महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य |
| (ii) अ + ओ = ओ | दन्त + ओष्ठ = दन्तोष्ठ |
| आ + ओ = ओ | महा + ओजस्वी = महोजस्वी |
| अ + औ = औ | वन + औषधि = वनौषधि |
| आ + औ = औ | महा + औदार्य = महौदार्य |

(घ) यण सन्धि—जब ह्रस्व या दीर्घ इ, उ या ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आएँ तो इ का यू, उ का व तथा ऋ का र हो जाता है; जैसे—

- | | |
|----------------|---------------------------|
| (i) ई + अ = यू | यदि + अपि = यद्यपि |
| इ + आ = या | इति + आदि = इत्यादि |
| ई + उ = यु | अति + उत्तम = अत्युत्तम |
| इ + ऊ = यू | नि + ऊन = न्यून |
| उ + अ = व | सु + अच्छ = स्वच्छ |
| उ : आ = वा | सु + आगत = स्वागत |
| उ + इ = वि | अनु + इति = अन्विति |
| ऊ + आ = वा | वधु + आगमन = वध्वागमन |
| ई + ए = ये | प्रति + एक = प्रत्येक |
| उ + ए = वे | अनु + एषण = अन्वेषण |
| ऋ + आ = रा | पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा |

(ङ) अयादि सन्धि—यदि ए, ए और ओ, औ के पश्चात् इन्हें छोड़कर कोई अन्य स्वर हो तो इनका परिवर्तन क्रमशः, अय, आय, अव, आव में हो जाता है। यथा—

- | | |
|----------------|----------------|
| (i) ए + अ = अय | ने + अन = नयन |
| ऐ + अ = आय | नै + अक = नायक |
| ओ + अ = अव | पो + अन = पवन |
| औ + अ = आव | पौ + अक = पावक |

अध्याय — 5 विराम-चिह्न



स्मरणीय बिंदु

‘विराम का अर्थ है’ रुकना। जिस प्रकार ट्रैफिक लाइट हमें संकेत देती है कि कब रुकना है, कब चलने के लिये तैयार रहना है और कब आगे बढ़ना है, उसी प्रकार किसी भी वाक्य को बोलते व लिखते समय विराम-चिह्न ही हमें संकेत देते हैं कि कब थोड़ा रुकना है अथवा कब पूर्ण रूप से विराम करना है। कब प्रश्नात्मक भाव व्यक्त करना है और कब विस्मयादि बोधक का भाव व्यक्त करना है।

इस प्रकार, वाक्य बोलते या लिखते समय विराम प्रकट करने वाले चिह्नों को विराम चिह्न कहते हैं।

हिन्दी के विराम चिह्न निम्नलिखित हैं—

नाम	चिह्न
1. पूर्ण विराम	।
2. अल्प विराम	,
3. अर्ध विराम	;
4. प्रश्नसूचक	?
5. विस्मयादि बोधक	!
6. योजक	—
7. निर्देशक	—
8. कोष्ठक	(), { }
9. उद्धरण	“ ”, ‘ ’
10. विवरण	: —
11. हँसपद (त्रुटिपूरक चिह्न)	^
12. उपविराम	:
13. लाघव	°

1. पूर्ण विराम (।)

प्रयोग स्थितियाँ—

(ग) किसी उद्धरण से पूर्व—

उदाहरण— मोहन ने कहा, “उसने स्कूल छोड़ दिया है।”

(घ) एक ही शब्द या वाक्यांश की पुनरावृत्ति होने पर—

उदाहरण— भागो, भागो, तूफान आ गया।

(ङ) विशेषण उपवाक्यों के बीच में—

उदाहरण— वह लड़का, जिसे हमने कल देखा था, मोहित का बड़ा भाई है।

(च) हाँ या नहीं के बाद —

उदाहरण —

(i) हाँ, मैं चल फिर सकता हूँ।

(ii) नहीं, तुम यह पुस्तक मत पढ़ो।

(क) सरल, संयुक्त तथा मिश्र वाक्य के अंत में—

उदाहरण —

(i) विकास मुंबई गया।

(ii) मोहित ने कहा कि मैं पुस्तकालय जाऊँगा।

(iii) निकिता ने मुकेश को आवाज दी, परंतु उसने सुना नहीं।

(ख) अप्रत्यक्ष प्रश्न वाले वाक्यों के अंत में —

उदाहरण—

मैंने नलिनी से पूछा कि वह क्या कर रही है।

(ग) दोहा, चौपाई, सोरठा आदि छंदों के पहले चरण के अंत में एक पूर्ण विराम तथा दूसरे चरण के अंत में दो पूर्ण विराम चिह्नों का प्रयोग होता है।

उदाहरण—

गुरु गोविंद दोउ खड़े, काके लागू पाय।

बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।।

(घ) पूर्ण विराम का प्रयोग वाक्य पूर्ण हो जाने पर किया जाता है, अतः प्रत्येक है, था के बाद इसका प्रयोग नहीं करना चाहिए।

यह देखना चाहिए कि वाक्य पूरा हो गया है या नहीं।

(ङ) और से पहले कभी पूर्ण विराम नहीं लगता है।

2. अल्प विराम (,)

प्रयोग स्थितियाँ—

(क) वाक्य में शब्दों के जोड़ों को अलग करने के लिए—

उदाहरण—दुःख और सुख, पाप और पुण्य — ये सब ईश्वर के बनाए हुए हैं।

(ख) उपाधियों को अलग करने के लिए—

उदाहरण — बी.ए., एम.ए., एम.फिल

3. अर्द्ध विराम (;)

प्रयोग स्थितियाँ—

(क) विपरीत अर्थ प्रकट करने के लिए—

उदाहरण— उसने मोंटू को गाली दी; फिर भी वह चुप रहा।

(ख) किसी नियम के उदाहरण सूचक शब्द से पूर्व—

उदाहरण— अक्सर स्त्रियों के नामों के साथ 'देवी' शब्द जोड़ा जाता है; जैसे लक्ष्मी देवी।

(ग) समानाधिकरण वाले वाक्यों के बीच में—

उदाहरण— आज भारत में बेरोज़गारी है; भूख है; क्षेत्रवाद का जोर है।

4. प्रश्नवाचक चिह्न (?)

प्रयोग स्थितियाँ—

(क) प्रश्नवाचक वाक्यों के अंत में—

उदाहरण— क्या आप बाजार जा रहे हैं?

(ख) संदेहात्मक या अनिश्चयात्मक वाक्यों के अंत में—

उदाहरण— कल आप ही मिले थे?

(ग) व्यंग्यात्मक वाक्यों के अंत में—

उदाहरण— देश के नेताओं के कारनामों से इंद्र भी शरमा जाए?

5. विस्मयादिबोधक चिह्न (!)

प्रयोग स्थितियाँ—

(क) संबोधन शब्दों के बाद—

उदाहरण— मोहन! यहाँ आओ।

(ख) विस्मयसूचक शब्दों, पदबंधों अथवा वाक्यों के अंत में—

उदाहरण—

(i) वाह! क्या सुंदर दृश्य है।

(ii) ओह! भारत मैच हार गया।

(ग) जिन प्रश्नों के उत्तर की अपेक्षा न हो—

उदाहरण— अब क्या होना है!

6. योजक (-)

प्रयोग स्थितियाँ—

(क) द्वंद्व समास के बीच में—

उदाहरण— माता-पिता, पाप-पुण्य।

(ख) पुनरुक्त या युग्म शब्दों के बीच में—

उदाहरण— तेज़-तेज़, कल-कल

(ग) शब्दों में लिखी जाने वाली अपूर्ण संख्याओं के बीच में—

उदाहरण— तीन-चौथाई, एक-तिहाई

(घ) सा, सी, से आदि तुलनात्मक शब्दों के बीच में—

उदाहरण— कबीर-सा भक्त, मीरा-सी दीवानी।

(ङ) पदबंध को सामासिक बनाने के लिए—

उदाहरण— दौड़ते-वौड़ते, चाय-वाय।

7. निर्देशक (—)

प्रयोग स्थितियाँ—

(क) वाक्यांश या पद की व्याख्या के लिए—

उदाहरण— तुम्हें एक अच्छा नागरिक बनना है — परिश्रम, लगन और कार्यकुशलता से।

(ख) संवादों/वार्तालापों में नामों के बाद—

उदाहरण— मोहिनी — कहिए क्या हाल है?
विभू — ठीक हूँ।

(ग) 'निम्नलिखित' से प्रारंभ होने वाले वाक्य के अंत में—

उदाहरण— निम्नलिखित शब्दों पर ध्यान दीजिए—

(घ) अवतरण या अंश को लिखकर उसके लेखक का नाम लिखना हो—

उदाहरण—“स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है”—बाल गंगाधर तिलक

8. कोष्ठक (() { })

प्रयोग स्थितियाँ—

(क) कठिन शब्दों के अर्थ स्पष्ट करने के लिए—

उदाहरण— सरकार ने पुल निर्माण हेतु टेंडर (निविदा) आमंत्रित की है।

(ख) किसी शब्द या वाक्य को स्पष्ट करने के लिए—

उदाहरण— मुंशी (प्रेमचंद) जी प्रसिद्ध उपन्यासकार थे।

9. विवरण चिह्न (:—)

किसी बात का उत्तर अथवा उदाहरण अगली पंक्ति में देने के लिए जिस विराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है, वह विवरण चिह्न कहलाता है। जैसे—

(क) टिप्पणी के लिए नीचे देखें :—

(ख) विशेषण के चार भेद होते हैं :—

10. उद्धरण चिह्न ('.....' “.....”)

प्रयोग स्थितियाँ—

(क) शीर्षक लिखने में—

उदाहरण— 'महाभारत' के रचयिता वेदव्यास जी हैं।

(ख) किसी व्यक्ति के कथन को मूल रूप में उद्धृत करने के लिए—

उदाहरण— नेता जी कहते हैं— 'करो या मरो'

(ग) विशिष्टता दिखाने के लिए —

उदाहरण — घोड़ों का घर 'अस्तबल' होता है

11. त्रुटि पूरक या हंस पद (^)

प्रयोग स्थितियाँ —

जब लिखने से कुछ छूट जाए —

उदाहरण—दूसरों^उपकार करने वाले व्यक्ति दुर्लभ हैं।

(का)

12. उप विराम या अपूर्ण विराम (:)

प्रयोग स्थितियाँ —

शीर्षक लिखने में—

उदाहरण — मेघदूतः कुछ विचारणीय प्रसंग

13. लाघव (°)—इस चिह्न का प्रयोग शब्दों को संक्षिप्त रूप में

दिखाने के लिए किया जाता है। जैसे:

प्रयोग स्थितियाँ —

किसी बड़े शब्द को संक्षेप में लिखने के लिए—

उदाहरण — डॉक्टर — डॉ०

पण्डित — पं०

अध्याय — 6 अर्थ की दृष्टि से वाक्य भेद



स्मरणीय बिंदु

अपनी बात या विचारों को दूसरों तक पहुँचाने के लिए क्रमबद्ध और सार्थक शब्द समूह की आवश्यकता होती है, जिसे वाक्य कहते हैं। जैसे

1. मोहन मेरा भाई है।

2. राम साइकिल चला रहा है।

विशेषताएँ—

(i) वाक्य की रचना पदों के मेल से होती है।

(ii) वाक्य अपने आप में पूर्ण होते हैं।

(iii) वाक्य में पूर्ण भाव को प्रकट करने की क्षमता होती है।

विशेष—कभी-कभी कुछ शब्दों में भी अपने विचार या भाव

को प्रकट किया जा सकता है ; जैसे—

पहला — जाओगे ?

दूसरा — कहाँ ?

पहला — स्कूल।

दूसरा — कब ?

पहला — कल

दूसरा — ठीक है।

वाक्य भाषा या विचार को व्यक्त करते हैं। इस प्रकार उपर्युक्त शब्द वाक्य नहीं कहे जा सकते हैं।

वाक्य के अंग

वाक्य के दो अंग होते हैं—

(क) उद्देश्य—वाक्य में जिसके बारे में बात हो रही है, वह वाक्य का उद्देश्य होता है।

जैसे—

(क) अध्यापक व्याकरण पढ़ा रहे हैं।

(ख) रमेश खाना खा रहा है।

(ग) हरीश बाहर जाता है।

(घ) भिखारी को भोजन दो।

उपर्युक्त उदाहरणों में अध्यापक, रमेश, हरीश और भिखारी उद्देश्य हैं, क्योंकि इनके विषय में कुछ कहा गया है। उद्देश्य को 'कर्ता' भी कहते हैं।

(ख) विधेय—वाक्य में उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाता है, वह वाक्य का विधेय होता है।

ऊपर दिए गए वाक्यों में अध्यापक, रमेश, हरीश और भिखारी आदि के विषय में जो भी कहा गया है वह विधेय है।

जैसे—व्याकरण पढ़ा रहे हैं, खाना खा रहा है, बाहर जाता है, को भोजन दो।

उद्देश्य और विधेय का विस्तार

1. उद्देश्य और विधेय का विस्तार—कभी-कभी वाक्य में उद्देश्य के बारे में बताने के लिए दूसरे शब्दों का भी सहारा लिया जाता है। इन दूसरे शब्दों को उद्देश्य का विस्तार कहते हैं; जैसे—

खंड (क)

(क) वृक्षों को मत काटो।

(ख) हनुमान ने लंका जला दी।

खंड (ख)

(क) फलों से भरे वृक्षों को मत काटो।

(ख) वीर हनुमान ने लंका जला दी।

उपर्युक्त खंड (क) में दिए गए वाक्यों में वृक्षों तथा हनुमान पद उद्देश्य का कार्य कर रहे हैं जबकि खंड (ख) के अंतर्गत फलों से भरे और वीर पदों द्वारा उद्देश्य की विशेषता बताई जा रही है, अतः ये उद्देश्य के विस्तार हैं। विशेषण शब्दों को उद्देश्य का विस्तार कहते हैं।

2. विधेय का विस्तार—मूल विधेय को पूर्ण करने के लिए जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें विधेय का विस्तार कहते हैं; जैसे—

खंड (क)

(क) नीरज परिश्रम करता है

(ख) मैंने पुस्तक पढ़ी।

खंड (ख)

(क) नीरज बहुत परिश्रम करता है।

(ख) मैंने प्रथम पुरस्कार के रूप में प्राप्त पुस्तक पढ़ी।

उपर्युक्त खंड (क) में दिए वाक्यों में परिश्रम करता है, पुस्तक पढ़ी पद विधेय का कार्य कर रहे हैं। खंड (ख) के अंतर्गत बहुत, प्रथम पुरस्कार के रूप में प्राप्त पदों द्वारा विधेय की विशेषता बताई जा रही है। अतः ये विधेय के विस्तार हैं। विधेय की विशेषता बताने वाले विशेषण शब्दों को विधेय का विस्तार कहते हैं।

वाक्य के प्रकार



अर्थ के आधार पर



रचना के आधार पर

नोट—पाठ्यक्रम में केवल 'अर्थ के आधार पर वाक्य' है।

(क) अर्थ के आधार पर

अर्थ के आधार पर वाक्य आठ प्रकार के होते हैं—

- विधानवाचक वाक्य**—जिस वाक्य के द्वारा किसी काम का करना या स्थिति का होना पाया जाए या एक सरल वाक्य, जिसमें कर्ता, कर्म और क्रिया हो, उसे विधानवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे—
(क) रमा पत्र लिख रही है। (काम का करना)
(ख) धीरज कुमार बहुत बोलता है। (बोलने की क्रिया)
- निषेधवाचक वाक्य**—जिस वाक्य से किसी काम के न करने या स्थिति के न होने का बोध हो, उसे निषेधवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे—
(क) यह मैं न खा पाऊँगा। (ख) मोहन ने खाना नहीं खाया।
- प्रश्नवाचक वाक्य**—जब वाक्य में प्रश्न किया जाए या जिसमें क्या, कौन, कब, कहाँ, कैसे, किसका, किसलिए आदि प्रश्नवाचक शब्द आए, उसे प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे—
(क) आज तुम्हारे साथ कौन था? (ख) क्या तुम्हारे पिता जी वकील हैं?
- इच्छावाचक वाक्य**—जिस वाक्य से इच्छा, आशीर्वाद, शुभकामना आदि का बोध हो, उसे इच्छावाचक वाक्य कहते हैं; जैसे—
(क) नववर्ष की शुभकामनाएँ! (शुभकामना) (ख) विजयी भव! (आशीर्वाद)
- संदेहवाचक वाक्य**—जिस वाक्य से काम के होने में संदेह अथवा संभावना का बोध हो उसे संदेहवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे—
(क) शायद आज वर्षा हो। (ख) हो सकता है मैं कल बाजार जाऊँ।
- आज्ञावाचक वाक्य**—जिस वाक्य से आज्ञा, आदेश, विनय, सलाह, प्रार्थना आदि का बोध हो, उसे आज्ञावाचक वाक्य कहते हैं; जैसे—
(क) मेरे लिए खाना लाओ। (ख) सदा सत्य बोलो।
- संकेतवाचक वाक्य**—जिस वाक्य में एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया पर निर्भर करता है, उसे संकेतवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे—
(क) अगर तुम आती तो हम बाजार चलते। (ख) वर्षा होती तो मौसम सुहावना हो जाता।
- विस्मयवाचक वाक्य**—जिस वाक्य से हर्ष, विस्मय (आश्चर्य), शोक, दुःख आदि के भाव प्रकट हों, उसे विस्मयवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे—
(क) छिः! कितनी गंदगी है। (ख) अरे! मेरा मित्र प्रथम आया है।
(ग) वाह! कितना सुन्दर दृश्य है।

पाठ्य-पुस्तक स्पर्श भाग-1 गद्य खंड

अध्याय — 1 दुःख का अधिकार

लेखक परिचय

यथार्थवादी शैली के विशिष्ट रचनाकार यशपाल जी का जन्म पंजाब के फिरोजपुर छावनी में सन् 1903 में हुआ था। काँगड़ा में प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद बी.ए. लाहौर के नेशनल कॉलेज से किया। भगतसिंह और सुखदेव के सम्पर्क में आने के बाद ये स्वाधीनता संग्राम से जुड़ गए। जिसके फलस्वरूप जेल भी जाना पड़ा एवं सन् 1976 में इनका देहान्त हो गया।

यशपाल जी ने सामाजिक विषमता, राजनैतिक पाखंड व रुढ़ियों को अपनी रचनाओं का मुख्य विषय बनाकर उनका विरोध किया। जिनमें ज्ञानदान, झूठा सच, दादा कामरेड, फूलों का कुर्ता, पिंजरे की उड़ान, अमिता आदि मुख्य रचनाएँ हैं।

पाठ का सारांश

'दुःख का अधिकार' यशपाल की एक मार्मिक कहानी है। इसमें एक निर्धन परिवार की करुणापूर्ण वेदना का यथार्थ चित्रण है। भगवाना एक गरीब नवयुवक था। वह नगर के पास एक खेत में फल, सब्जी उगाकर उन्हें बेचकर परिवार का गुजारा करता था। एक दिन वह सवेरे खरबूजे तोड़ने गया तो उसे साँप ने डस लिया और उसकी मृत्यु हो गई। घर में उसकी बूढ़ी माँ, पत्नी और बेटा-बेटी थे। घर में जो कुछ थोड़ा-बहुत था, वह तो भगवाना के क्रिया-कर्म में लग गया। अब भूख से लड़ने के लिए भगवाना की माँ को पुत्र शोक को मन में दबाकर बाजार में खरबूजे बेचने बैठना पड़ा। उसका इस प्रकार बैठना बाजार के धनी लोगों को खलता है। वे उसे तरह-तरह से ताने मारते हैं। तब लेखक भगवाना की माँ के पुत्र शोक की तुलना एक धनी महिला के पुत्र शोक से करता है, जो एक वर्ष पूर्व अपने पुत्र के शोक से ढाई मास पलंग से उठ न सकी थी जबकि डॉक्टर दिन-रात उसकी सेवा में रहते थे।

लेखक एक दिन बाजार में जा रहा था। उसने देखा कि वहाँ फुटपाथ पर कुछ तो डलिया में और कुछ ज़मीन पर बिक्री के लिए खरबूजे पड़े थे। खरबूजों के समीप ही एक अधेड़ उम्र की गरीब वृद्धा दोनों घुटनों पर सिर रख रो रही थी। उधर बाजार के लाला लोग उसके सम्बन्ध में घृणा से बातें कर रहे थे। लेखक ने भी जानने की कोशिश की।

लेखक को पूछने पर पता चला कि बुढ़िया का एक जवान बेटा था-भगवाना। माँ-बेटे के अतिरिक्त घर में भगवाना की पत्नी और दो बच्चे (एक बेटा एक बेटी) भी थे। भगवाना शहर के पास ही ज़मीन के एक छोटे-से-टुकड़े पर फल और सब्जी उगाकर अपने परिवार का निर्वाह करता था। बाजार में खरबूजे आदि बेचने कभी वह स्वयं बैठता और कभी उसकी बूढ़ी माँ बैठती थी।

एक दिन सवेरे-सवेरे भगवाना खरबूजे तोड़ने गया तो उसे साँप ने डस लिया। विष उतारने के लिए ओझा बुलाया गया। जो कुछ पास में था, वह ओझा की भेंट हो गया, पर फिर भी भगवाना न बचा। अपने कड़े-कंगन बेचकर माँ ने उसका कफन मँगाया तब दाह-संस्कार हुआ, अब घर में कुछ खाने को भी न रहा और न कोई पैसा ही बुढ़िया के पास था।

अगले दिन सवेरे बच्चे उठे। भूख के कारण रोने लगे तो बूढ़ी दादी ने उन्हें खाने को खरबूजे दे दिए, पर बहू को कुछ न दे सकी। वह भी ज्वर से तप रही थी।

तब उस वृद्धा ने भगवाना के इकट्ठे किए खरबूजे डलिया में डाले, उन्हें बेचने बाजार में आ गई, पर पुत्र-शोक के कारण वह फफक-फफक कर मुँह छुपाए रो रही थी। कितना कठोर दिल था उसका, जो गरीबी के कारण पुत्र-शोक होने पर भी बाजार में खरबूजे बेचने आ गई थी।

उस वृद्धा की स्थिति को देख उसके पुत्र-शोक की तुलना के लिए लेखक को गत वर्ष की एक घटना याद आई कि उसके पड़ोस में एक कुलीन धनिक स्त्री पुत्र वियोग के कारण ढाई महीने चारपाई से उठ न सकी। दिन-रात उसका इलाज भी चलता रहा और इधर यह स्त्री है, जो निर्धनता और भूख के कारण दिल पर पत्थर रखकर पुत्र की मृत्यु के दूसरे दिन ही बाजार में खरबूजे बेचने आ गई है।

इसको देखकर लोग उस पर ताना मारने से नहीं चूकते, उसका छुआ सामान लोग खरीदने से कतराते हैं। लेखक इस स्थिति को देखकर बहुत दुःखी हुआ और माना कि लोग अमीर-गरीब में भेद-भाव करते हैं। लोग अमीर-गरीब को अलग-अलग नज़रों से देखते हैं यह समाज की एक बुराई है। हमें भेदभाव की नीति नहीं रखनी चाहिए, लोगों का ताना कसना दुःख को बढ़ावा देता है। लोगों को सहानुभूतिपूर्वक गरीब के दुःख को समझना चाहिए, लेखक यह संदेश देना चाहता है कि गरीबों को भी दुःख मनाने का अधिकार होना चाहिए।

शब्दार्थ

पोशाक—पहनावा; **सहूलियत**—आराम; **मुँह-अंधेरे**—सवेरे; **बरकत**—बढ़ोत्तरी; **खसम**—पति; **लुगाई**—पत्नी; **कछियारी**—खेतों में सब्जी-फल इत्यादि उगाना; **ओझा**—झाड़-फूँक करने वाला; **निर्वाह**—गुजारा; **द्रवित**—पिघलना; **अड़चन**—विघ्न; **बेहया**—निर्लज्ज; **व्यथा**—दुःख; **श्रेणियाँ**—वर्ग; **बदन**—शरीर; **मूर्छा**—बेहोश; **मुर्दा**—लाश; **सहसा**—अचानक; **व्यवधान**—रुकावट; **दफे**—बार; **संभ्रात**—अमीर-सभ्य।

अध्याय — 2 एवरेस्ट मेरी शिखर यात्रा

— बछेन्द्रीपाल

लेखिका परिचय

बछेन्द्री पाल का जन्म 24 मई सन् 1954 को उत्तराखण्ड के चमोली जिले में बंपा गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम किशन सिंह तथा माता का हंसादेवी नेगी है। परिवार के आर्थिक रूप से कमजोर होने के बावजूद स्वयं सिलाई-कढ़ाई कर बछेन्द्री पाल ने एम.ए., बी.एड. की उच्च शिक्षा हासिल की।

बछेन्द्री को बचपन से ही पहाड़ों पर चढ़ने का चाव था इसलिए जब इंडियन माउंटेन फाउंडेशन ने एवरेस्ट अभियान के लिए साहसी

महिलाओं की खोज शुरू की तो बछेन्त्री भी इस अभियान में शामिल हो गयीं। बछेन्त्री ने अपने ट्रेनिंग काल में ही 7500 मी. ऊँची मानचोटी पर चढ़ने में सफलता प्राप्त कर ली। जिससे इनका हौसला और बुलन्द हो गया तथा सतत् अभ्यास व लगन के बल पर एवरेस्ट विजय हासिल करने वाली प्रथम भारतीय महिला का गौरव प्राप्त किया।

पाठ का सारांश

बछेन्त्री पाल हिमालय के सर्वोच्च शिखर एवरेस्ट पर चढ़ने वाली प्रथम भारतीय महिला हैं। प्रस्तुत पाठ में उन्होंने अपनी यात्रा की चर्चा की है। इस यात्रा में उन्हें भारी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। जिस दिन उन्होंने अपनी यात्रा शुरू की उसी दिन से दिक्कतें शुरू हो गईं। जहाँ से उन्हें यात्रा शुरू करनी थी, वहीं कड़ी ठण्ड पड़ रही थी। तेज़ बर्फ़ीली हवाएँ चल रही थीं। लेकिन बछेन्त्री उनसे डरी नहीं बल्कि एवरेस्ट के प्रति उनका आकर्षण और तीव्र हुआ। अगले दिन में दो लोगों की मृत्यु हुई जो घबरा देने के लिए काफी थी किन्तु उनके नेता कर्नल खुल्लर ने मौत को सहज भाव से लेने की बात कर उत्साह भर दिया। उनका बेसकैम्प भी काफी ऊँचाई पर स्थित था जहाँ अनियमित रूप से हिमपात हो रहा था। पहले तीन दिन उन्हें पर्वतारोहण के बारे में आवश्यक प्रशिक्षण दिया गया। इसी दौरान तेनजिंग शेरपा से इस दल की मुलाकात हुई जो काफी प्रेरणादायक रही। 15-16 मई 1984 का दिन बछेन्त्री के लिए हादसे वाला सिद्ध हुआ। जिस जगह इनका कैम्प लगा हुआ था वहीं बर्फ़ का एक भारी चट्टाननुमा टुकड़ा आकर गिर गया। सभी लोग उसमें दब गये। दैवयोग से किसी की मृत्यु नहीं हुई। लेकिन बछेन्त्री को छोड़कर बाकी लोग घायल हो गए और वापस भेज दिए गए। बर्फ़ खोदकर बछेन्त्री को निकाला गया। इस घटना से उनकी हिम्मत और बढ़ गई।

इतनी कठिन परिस्थितियों में भी उन्हें अपने साथियों की मदद करने का विचार रहता था। ऐसे ही एक मौके पर वह एक साथी की मदद के लिए नीचे उतर आईं। 'साउथ कोल कैम्प' पर इनका अगला कैम्प लगा।

अगले दिन नाश्ता करके लेखिका अपने तम्बू से निकल पड़ी। अंगदोरजी बाहर खड़ा था। वह बिना ऑक्सीजन के चढ़ाई करने वाला था। लेकिन इसके कारण उसके पैर ठंडे पड़ जाते थे। उसने लेखिका से साथ चलने के लिए पूछा। सुबह 6:20 पर वे दोनों साउथ कोल से बाहर निकले। ठंड बहुत थी। दोनों निश्चित गति से ऊपर चढ़ते गए। दो घंटे से कम समय में वे शिखर कैम्प पर पहुँच गए। लहाटू उनके पीछे-पीछे आ रहा था। लहाटू एक नायलॉन की रस्सी लाया था। उसने रस्सी अपनी सुरक्षा की बजाय उनके सन्तुलन के लिए पकड़ रखी थी। रेगुलेटर पर ऑक्सीजन की आपूर्ति बढ़ाते ही चढ़ाई आसान लगने लगी। दक्षिण शिखर के ऊपर हवा की गति बढ़ गई थी। लेखिका की साँस मानो रुक गई थी। उसे विचार काँधा कि सफलता बहुत नज़दीक है। लेखिका 23 मई 1984 के दिन दोपहर एक बजकर सात मिनट पर एवरेस्ट की चोटी पर जा खड़ी हुई। एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचने वाली वह प्रथम भारतीय महिला थीं।

एवरेस्ट शंकु की चोटी पर इतनी जगह नहीं थी कि दो व्यक्ति एक साथ खड़े हो सकें। चारों ओर हजारों मीटर लम्बी सीधी ढलान थी। सुरक्षा का प्रश्न सामने था। उसने फावड़े से बर्फ़ की खुदाई कर अपने आपको सुरक्षित किया। इसके बाद वह घुटनों के बल बैठी, बर्फ़ को अपने माथे से लगाया और 'सागरमाथे' के ताज का चुम्बन लिया। उसने अपने थैले से दुर्गा माँ का चित्र और हनुमान चालीसा निकाला। उन्हें लाल कपड़े में लपेटा और छोटी-सी पूजा अर्चना कर उन्हें बर्फ़ में दबा दिया। लेखिका को इस आनंद के क्षण में अपने माता-पिता का ड्रयान आया। इसके बाद उसने उठकर हाथ जोड़े और अंगदोरजी के प्रति आदर-भाव से झुकीं। उन्होंने उसे गले लगाया और कानों में फुसफुसाया—“दीदी, तुमने अच्छी चढ़ाई की। मैं बहुत प्रसन्न हूँ।”

कुछ देर बाद सोनम पुलजर और अंगदोर जी ने फोटो लेने शुरू कर दिए। इस समय तक लहाटू ने नेता को एवरेस्ट पर चारों के होने की सूचना दे दी। तब लेखिका के हाथ में वॉकी-टॉकी दिया गया। कर्नल खुल्लर उनकी सफलता पर बहुत प्रसन्न थे। उन्होंने बधाई दी। वे बोले—“मैं तुम्हारी इस अनूठी उपलब्धि के लिए तुम्हारे माता-पिता को बधाई देना चाहूँगा। देश को तुम पर गर्व है और अब तुम ऐसे संसार में वापस जाओगी, जो तुम्हारे पीछे छोड़े हुए संसार से एकदम भिन्न होगा।”

शब्दार्थ

रज्जू—रस्सी; उपस्कर—आरोही की आवश्यक सामग्री; ग्लेशियर—बर्फ़ की नदी; अग्रिम—आगे वाला; अभियांत्रिकी—तकनीकी; प्लूम—बर्फ़ के बड़े फूल जैसा पिंड; शंकु—नोक; जोखिम—खतरा; बेस-कैम्प—आधार शिविर; अवसाद—उदासी, दुःख; अवगत कराना—जानकारी देना; शिखर—चोटी, मुकुट; कर्मठता—कर्म के प्रति निष्ठा; अनियमित—नियमित न हो; हिमपात—बर्फ़ गिरना; नौसिखिया—नयी-नयी सीखने वाली; पर्वतारोही—पर्वतों पर चढ़ने वाला; हिमविदर—बर्फ़ में दरार; अभियान—किसी काम के लिए प्रतिबद्धता।

अध्याय — 3 तुम कब जाओगे, अतिथि

— शरद जोशी

लेखक परिचय

हिन्दी के प्रमुख व्यंग्यकार शरद जोशी का जन्म मध्य प्रदेश के उज्जैन शहर में सन् 1931 में हुआ था। इन्होंने कुछ समय तक नौकरी करने के बाद लेखन के क्षेत्र में पर्दापण किया। कहानी लेखन से शुरुआत करने के बाद ये धीरे-धीरे व्यंग्य लेखन करने लगे। इन्होंने व्यंग्य लेख, व्यंग्य उपन्यास, व्यंग्य कॉलम के साथ हास्य व्यंग्यपूर्ण धारावाहिकों की पटकथाएँ व संवाद भी लिखे। हिन्दी साहित्य जगत में व्यंग्य को प्रतिष्ठित करने में इन्होंने उल्लेखनीय योगदान दिया। सन् 1991 में इनका निधन हो गया।

परिक्रमा, किसी बहाने, जीप पर सवार इल्लियाँ, एक था गधा, अंधों का हाथी, तिलस्म आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

इन्होंने समाज की सभी विसंगतियों का यथार्थ चित्रण अपनी रचनाओं में कर पाठकों को चकित कर दिया। मुहावरे व हास्य व्यंग्य इनकी रचनाओं के प्राण हैं।

पाठ का सारांश

प्रस्तुत पाठ 'तुम कब जाओगे, अतिथि' हिन्दी के महान् व्यंग्यकार शरद जोशी द्वारा रचित है। इस पाठ में लेखक ने ऐसे व्यक्तियों की खबर ली है, जो अपने किसी परिचित या रिश्तेदार के घर बिना सूचना दिए चले जाते हैं और फिर जाने का नाम नहीं लेते, भले ही उनके रहने से मेजबान को कितनी भी कठिनाई हो, उन पर कितना भी भार क्यों न पड़े? वास्तव में अच्छा अतिथि तो वही होता है, जो पहले से ही अपने आने की सूचना देकर आए और एक या दो दिन की मेहमानी कराकर विदा ले। लेकिन इस पाठ में वर्णित अतिथि की तरह जो होगा, उसे तो मेजबान को गेट आउट कहने पर विवश होना पड़ेगा। इस पाठ के माध्यम से लेखक ने यह संदेश दिया है कि अतिथि के एक या दो दिन के बाद अपने घर लौट जाने में ही उसकी गरिमा है, उसका देवत्व सुरक्षित है तथा सत्कार की ऊष्मा बनी रहती है। ऐसी बातों को दर्शाना ही इस पाठ का संदेश है, प्रेरणा है, शिक्षा है।

लेखक कहता है कि अतिथि को आए चार दिन बीत गए थे। इसलिए लेखक का मन बार-बार यह सोचने पर विवश हो जाता था कि अतिथि कब जाएगा? लेखक तथा उसकी पत्नी ने अतिथि का बहुत ही गर्मजोशी से स्वागत किया। उसे खूब अच्छी तरह से खिलाया-पिलाया, सिनेमा दिखाया तथा अतिथि की मेहमान नवाजी में कोई भी कसर न छोड़ी। लेकिन अतिथि ने जब अपने धोने वाले कपड़ों को लांड्री में देना चाहा तो लेखक को लगा अतिथि हमेशा देवता नहीं होते। क्योंकि हर तरह के विषय पर अतिथि के साथ गर्प्ये हो चुकी थीं, जिक्र हो चुका था। उसके बाद मौन-सा छा गया था, बोरियत होने लगी थी, भावनाएँ भी अपशब्दों का रूप धारण कर रही थीं। लेकिन इसके बावजूद अतिथि जाने का नाम नहीं ले रहा था। इससे अच्छे तो एस्ट्रानाट्स थे, जो लाखों मील लम्बी यात्रा करने के बाद भी लम्बे समय तक चाँद पर नहीं रुके थे। इसलिए बार-बार लेखक का मन सोचने पर विवश हो जाता कि अतिथि कब जाएगा? उसे उसका घर तो स्वीट लग रहा है, लेकिन दूसरे के घर की मिठास क्यों अपनी उपस्थिति से समाप्त कर रहा है? अतिथि का पाँचवाँ दिन था। इस तरह देवता और अतिथि में अंतर होता है, क्योंकि देवता तो दर्शन देकर चले जाते हैं, इसी में उनका देवत्व है। अतः अतिथि को लौट जाना चाहिए और अपना देवत्व पहचान कर इसे बरकरार रखने का प्रयास करना चाहिए।

शब्दार्थ

आगमन—आना; निस्संकोच—संकोच रहित; गुंजायमान—गूँजती हुई; चरण—पैर; निर्मूल—मूलरहित; मार्मिक—मर्मस्पर्शी; उपवास—व्रत; एस्ट्रानाट्स—अंतरिक्ष यात्री; शनैः-शनैः—धीरे-धीरे; आघात—चोट; सदैव—हमेशा; सतत—निरंतर; संक्रमण—एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाना; औपचारिक—रस्मी; कोनलों—कोनों से; छोर—किनारा; प्रतीत—लगना; अंतरंग—घनिष्ठ; अप्रत्याशित—अचानक; सामीप्य—समीपता; नम्रता—नरमी; सौहार्द—हृदय की सरलता।

अध्याय — 4 वैज्ञानिक चेतना के वाहक-चन्द्रशेखर वेंकटरामन्

—धीरंजन मालव

लेखक परिचय

धीरंजन मालवे का जन्म 9 मार्च 1952 को बिहार के नालंदा जिले के डुँवरावाँ नामक गाँव में हुआ था। इन्होंने एम. एस. सी. (सांख्यिकी), एम. बी. ए. और एल. एल. बी. की शिक्षा प्राप्त की थी। इन्होंने आकाशवाणी व दूरदर्शन के क्षेत्र में भी अपना योगदान दिया था। इन्होंने लंदन के बी. बी. सी. में कार्य करते हुए मालवे रेडियो विज्ञान पत्रिका 'ज्ञान-विज्ञान' का सम्पादन और प्रसारण भी किया। वर्तमान समय में मालवे जी वैज्ञानिक जानकारी लोगों तक पहुँचाने में जुटे हुए हैं।

मालवे जी ने एक पुस्तक 'विश्व-विख्यात भारतीय वैज्ञानिक' लिखी जिसमें कई भारतीय वैज्ञानिकों की संक्षिप्त जीवनियाँ हैं। मालवे जी ने अपनी भाषा में सीधी, सरल और वैज्ञानिक शब्दावली का प्रयोग किया।

पाठ का सारांश

प्रस्तुत पाठ लेखक धीरंजन मालवे द्वारा रचित है। इस पाठ में उन्होंने चंद्रशेखर वेंकटरामन् के संघर्षमय जीवन का चित्रण किया है। वेंकटरामन् कुल ग्यारह वर्ष की आयु में मैट्रिक, विशेष योग्यता के साथ इंटरमीडिएट, भौतिकी और अंग्रेजी में स्वर्ण पदक के साथ बी. ए. और प्रथम श्रेणी में एम. ए. करके मात्र अठारह साल की उम्र में कोलकाता में भारत सरकार के फाइनेंस डिपार्टमेंट में सहायक जनरल एकाउंटेंट नियुक्त कर लिए गए थे।

सन् 1930 में नोबेल पुरस्कार पाने के बाद रामन् ने अपने मित्र को पुरस्कार समारोह के बारे में यह लिखा था कि जैसे ही मैं पुरस्कार लेकर मुड़ा, तो देखा कि जिस स्थान पर मुझे बैठाया गया था, उसके ऊपर ब्रिटिश राज्य का 'यूनियन जैक' लहरा रहा है, तो मुझे दुःख हुआ कि मेरे दीन देश भारत की अपनी पताका तक नहीं है। मेरा गला भर आया और मैं रो पड़ा।

रामन् भारत में विज्ञान की उन्नति के चिर आकांक्षी थे तथा भारत की स्वतंत्रता के पक्षधर थे। एक मेधावी छात्र से महान् वैज्ञानिक तक की रामन् के जीवन की संघर्षमयी यात्रा तथा उनकी उपलब्धियों की जानकारी कराना ही इस पाठ का मुख्य उद्देश्य है।

रामन् का जन्म 7 नवंबर, सन् 1888 को तमिलनाडु के तिरुचिरापल्ली नगर में हुआ था। रामन् विज्ञान के रहस्यों को सुलझाने में बचपन से ही प्रयत्नशील रहे। कॉलेज में ही इन्होंने शोध-कार्यों में दिलचस्पी लेना प्रारम्भ कर दिया था। इनका पहला शोध पत्र 'फिलॉसॉफिकल मैगजीन' में प्रकाशित हुआ था। 'इंडियन एसोसिएशन फॉर द कल्टीवेशन ऑफ साइंस' एक अनूठी संस्था थी, जिसका उद्देश्य था देश में वैज्ञानिक चेतना का विकास हो। यहाँ यह महान् साधक के रूप में अभावों के बावजूद भौतिक विज्ञान को समृद्ध बनाने का प्रयास करते रहे। इन्हीं दिनों रामन् वादयंत्रों की ओर आकृष्ट हुए तो भारतीय संगीत तथा विदेशी संगीत में विद्यमान अंतर को मिलाया। रामन् ने अनेक ठोस रवेदार और तरल पदार्थों पर प्रकाश की किरण के प्रभाव का अध्ययन किया। अणुओं और परमाणुओं की आंतरिक संरचना का अध्ययन रामन् की खोज की वजह से सरल हो गया था। रामन् प्रभाव की खोज ने इन्हें विश्व के चोटी के वैज्ञानिकों की पंक्ति में ला खड़ा कर दिया था। सन् 1929 में इन्हें 'सर' की उपाधि प्रदान की गई। इन्हें विश्व के सर्वोच्च पुरस्कार—भौतिकी में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। भारतीय संस्कृति से रामन् को गहरा लगाव था। उन्होंने अपनी भारतीय पहचान को अक्षुण्ण रखा। उनके अंदर राष्ट्रीय चेतना थी और वे देश में वैज्ञानिक दृष्टि और चिंतन के विकास के प्रति समर्पित थे इसलिए रामन् के जीवन से प्रेरणा लेकर चारों ओर प्रकृति के बीच छिपे वैज्ञानिक रहस्यों को खोजने की, भेदने की आवश्यकता है।

शब्दार्थ

आभा—चमक; शोधकार्य—खोज; फोटॉन—प्रकाशका अंश; सृजित—रचा हुआ; जिज्ञासा—जानने की इच्छा; भ्रांति—संदेह; रुझान—झुकाव; संश्लेषण—मिलान करना; अक्षुण्ण—अखंडित; परिहास—हँसी-मजाक; कट्टर—दृढ़; आआदित—आनंदित; प्रतिमूर्ति—अनुकृति, प्रतिमा; प्रायोगिक—प्रयोग सम्बन्धी; आलोकित—प्रकाशित; कृत्रिम—बनावटी; समक्ष—सामने; परिणति—परिणाम; ऊर्जा—शक्ति; उपकरण—औजार; आदिकाल—प्राचीन समय; विराट—बहुत बड़ा; सशक्त—मजबूत; अनूठी—अनोखी; परिमाण—मात्रा; वर्ण—रंग; सटीक—पूरी तरह सही।

अध्याय — 5 शुक्र तारे के समान

—स्वामी आनंद

लेखक परिचय

संन्यासी स्वामी आनंद का जन्म सन् 1887 में गुजरात के कठियावाड़ जिले के किमड़ी नामक गाँव में हुआ। हिम्मतलाल इनका मूल नाम था। दस वर्ष की आयु में इन्हें कुछ साधु अपने साथ हिमालय ले गए और उन्होंने इनका नाम स्वामी आनंद रख दिया।

सन् 1907 में ये देश के स्वतंत्रता आन्दोलन से जुड़ गए। कुछ समय तक ये महाराष्ट्र से 'तरुण हिन्द' नामक अखबार निकालते रहे, बाद में बाल गंगाधर तिलक के 'केसरी' अखबार के लिए कार्य करने लगे। 1917 में गाँधीजी के संपर्क में आने के बाद उन्हीं के निर्देशन में 'नवजीवन' और 'यंग इंडिया' की प्रसार व्यवस्था में जुट गए। जिसके कारण ये गाँधी जी के साथ महादेव भाई देसाई व प्यारेलाल जी के निकट आए।

पाठ का सारांश

प्रस्तुत पाठ स्वामी आनंद द्वारा रचित है। इस पाठ में लेखक ने गाँधी जी के निजी सचिव महादेव भाई देसाई की बेजोड़ प्रतिभा और उनकी व्यस्ततम दिनचर्या का बड़ा ही बारीकी से वर्णन किया है। उनकी सरलता, सज्जनता, निष्ठा, समर्पण, निरभिमान आदि विशेषताओं से लेखक पूरी तरह से अभिभूत हैं और उसने बड़ी ही कुशलता से इन विशेषताओं को अपने शब्दों में पिरोया है। लेखक के अनुसार कोई भी महान् व्यक्ति, महानतम कार्य तभी कर पाता है, जब उसके साथ ऐसे सहयोगी हों, जो उसकी तमाम चिंताओं और उलझनों को अपने सिर ले लें। गाँधी जी के लिए महादेव भाई और भाई प्यारेलाल जी ऐसे ही सहयोगी थे।

लेखक कहता है कि शुक्र तारे की तरह ही भाई महादेव जी ने आधुनिक भारत की स्वतन्त्रता के उषाकाल में अपनी वैसी ही आभा से हमारे

आकाश को जगमगाया तथा शुक्र तारे की तरह ही अचानक अस्त हो गए। गांधी जी के लिए वे पुत्र से भी अधिक थे तथा उनके उत्तराधिकारी थे। वे रोज की मुलाकातें, पत्र-व्यवहार, आम सभाएँ आदि कामों के अलावा 'यंग इंडिया' साप्ताहिक में छपने वाले लेख, टिप्पणियाँ, पंजाब के मामलों के सार-संक्षेप और गाँधी जी के लेख—यह सारी सामग्री वे केवल तीन दिन में तैयार करते थे।

पहले महादेव भाई ने सरकार के अनुवाद विभाग में नौकरी की थी। भारत में इनकी लिखाई का कोई सानी न था। इसलिए वायसराय के पास जाने वाले पत्र हमेशा महादेव जी की लिखाई में होते थे। बड़े-बड़े सिविलियन और गवर्नर कहा करते थे कि सारी ब्रिटिश सर्विस में महादेव के समान अक्षर लिखने वाला कोई खोजने पर भी मिलता नहीं था।

प्रथम श्रेणी की शिष्ट, संस्कार संपन्न भाषा और मनोहारी लेखन-शैली की ईश्वरीय देन महादेव को मिली थी। गांधी जी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' का अंग्रेज़ी अनुवाद इन्होंने किया था। पर मीलों पैदल चलने के कारण प्रतिकूल प्रभाव पड़ा जो इनकी असमय मृत्यु का कारण बना। गांधी जी के दिल पर जीते जी इनकी मृत्यु का प्रभाव बना रहा। गाँधी जी इनको भूल न सके, इसलिए तो प्यारे लाल के स्थान पर गांधी जी के मुख से महादेव ही निकलता। वास्तव में महादेव भाई तथा प्यारे लाल गांधी जी के सच्चे सहयोगी थे।

शब्दार्थ

पेशा—व्यवसाय; हम्माल—कुली; लाड़ला—प्यारा; धुरंधर—प्रवीण; खर—गधा; पीर—महात्मा; ब्योरा—विवरण; रुबरु—आमने-सामने; सलतनत—हुकूमत; अनायास—अचानक; सराबोर—तरबतर; सानी—बराबरी करने वाला; विवरण—वर्णन; अद्यतन—अब तक का; सिलसिला—क्रम; स्याह—काला; गाद—तलछट; ब्योरा—विवरण; चौकसाई—नज़र रखना; जिगरी—घनिष्ट; बावची—रसोइया; आसुंतहिमाचल—सेतु बाँध रामेश्वर से हिमाचल तक का विस्तार; कलगी रूप—तेज़ चमकने वाला तारा; उषाकाल—प्रातःकाल; तत्काल—तुरन्त; समूचे—सारे।

पाठ्य-पुस्तक स्पर्श भाग-1 काव्य खंड

अध्याय — 1 रैदास के पद

— रैदास

कवि परिचय

रैदास नाम से विख्यात संत रविदास का जन्म सन् 1388 में बनारस में हुआ माना जाता है। इनकी ख्याति से प्रभावित होकर दिल्ली के शासक सिकन्दर लोदी ने इन्हें अपने दरबार में बुलवाया। रैदास भी कबीर के समान संत माने जाते हैं। इन्होंने भी मूर्तिपूजा, तीर्थयात्रा जैसे दिखावों का अपने पदों के द्वारा विरोध किया। रैदास को मध्ययुगीन साधकों में विशेष स्थान प्राप्त है। वे व्यक्ति की आंतरिक भावनाओं और आपसी भाईचारे को ही सच्चा धर्म मानते थे।

रैदास ने हृदय के भावों को सीधे-सादे पदों में बड़ी सहजता से प्रकट किया है। इनके द्वारा रचित पदों में आत्मनिवेदन, दास्यभाव, सहज भक्ति स्पष्ट दिखाई देती है। रैदास के चालीस पद सिकखों के पवित्र धर्मग्रन्थ 'गुरुग्रंथ साहब' में संकलित किए गए हैं।

रैदास ने अवधी, राजस्थानी, खड़ी बोली और उर्दू-फ़ारसी के शब्दों से युक्त ब्रजभाषा का अपनी काव्य-रचना में प्रयोग किया था। सन् 1518 ई. में इनका निधन हो गया।

कविता का सारांश

कवि रैदास ने पहले पद में अपने आराध्य श्री राम की आराधना करते हुए कहा है कि उन्हें राम के नाम की धुन लग गई है। जिसे अब छोड़ पाना सम्भव नहीं है। कवि ने अपने प्रभु तथा स्वयं के सम्बन्ध को अनेक उदाहरणों द्वारा स्पष्ट करते हुए कहा है कि प्रभु आप चंदन हैं तो मैं पानी, आप घनश्याम तो मैं मोर, आप चाँद तो मैं चकोर, आप दीपक तो मैं बाती, आप स्वामी तो मैं दास के समान हूँ। आपके बिना मेरा कोई अस्तित्व नहीं है। मैं तो आपका दास हूँ।

दूसरे पद में कवि ने प्रभु को सबका रक्षक माना है। उसके प्रभु दीन-दुःखियों पर दया करने वाले हैं। जिसे संसार अछूत मानता है पर परमात्मा बिना किसी से डरे निडर होकर उसका भी उद्धार कर देते हैं। जैसे उन्होंने कबीर, नामदेव, त्रिलोचन, सैनु जैसे निम्न जाति में उत्पन्न व्यक्तियों पर कृपा की और वैसे ही कवि पर कृपा कर उसे भी महान् बना दिया।

शब्दार्थ

बास—सुगंध; सोनहिं—सोने में; जोति—ज्योति, लौ; जाकी—जिसकी; समानी—समाना; मोरा—मोर; घन—बादल; चितवत—देखना; चंद—चाँद; बरै—जलती है; राती—रात में; कउनु—कौन; गरीब निवाजु—दीनों पर दया करने वाला; माथे—मस्तक पर; छोति—छुआछूत; ढरै—द्रवित होना; गोबिंदु—गोविन्द; तरै—तर गए, मोक्ष पा गए; सरै—संभव हो जाना; हरिजीउ—हरि जी से।

अध्याय — 2 दोहे

—रहीम

कवि परिचय

रहीम का जन्म सन् 1556 ई० में लाहौर (पाकिस्तान) में हुआ था। इनका पूरा नाम अब्दुरहीम खानखाना था। इन्हें अरबी, फ़ारसी, संस्कृत और हिन्दी भाषा का अच्छा ज्ञान था। मध्ययुगीन दरबारी संस्कृति के प्रतिनिधि कवियों में रहीम का महत्वपूर्ण स्थान था साथ ही ये अकबर के नवरत्नों में शामिल थे।

इनके नीतिपरक दोहे अधिक प्रचलित हैं क्योंकि इन्होंने दैनिक जीवन के उदाहरण देकर उन्हें सरल, सहज और बोधगम्य बना दिया; जिसके कारण ये सर्वसाधारण को जल्दी याद हो जाते हैं।

रहीम सतसई, शृंगार सतसई, मदनाष्टक, रास पंचाध्याय, रहीम रत्नावली, बरवै आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। जो 'रहीम ग्रन्थावली' में संकलित है। सन् 1626 ई. में इनका देहान्त हो गया।

कविता का सारांश

रहीम के दोहे उनके अपने निजी अनुभवों पर आधारित हैं। रहीम ने नीतिपरक दोहों के माध्यम से लोगों को नीतिपरक शिक्षाएँ दीं, मनुष्य को करणीय व अकरणीय आचरण से सम्बन्धित सुझाव दिए—

पहले दोहे में उन्होंने प्रेम सम्बन्धों को नाजुकता से संभालने व कभी न तोड़ने का संदेश दिया। वहीं दूसरे दोहे में अपने मन की पीड़ा को दूसरों के सामने प्रकट न कर अपने ही मन में रखने को कहा। तीसरे दोहे में एक परमात्मा का ही ध्यान करने, उनके शरण में जाने से सर्वकार्य की सिद्धि होने की प्रेरणा दी। चौथे दोहे में राम के उदाहरण द्वारा चित्रकूट के महत्त्व को दर्शाया। वहीं पाँचवें दोहे में थोड़े से अक्षर वाले दोहे छंद में गहरा व व्यापक अर्थ छिपे होने की बात कही।

छठे दोहे में आकार के स्थान पर उपयोगिता के महत्त्व को बताते हुए कहा है कि जहाँ प्यास बुझे वही सागर के समान है। सातवें दोहे में कंजूस लोगों पर व्यंग्य करते हुए कहा है कि जो लोग प्रसन्न होने पर भी दान नहीं देते वे पशु से भी हीन हैं। आठवें दोहे में एक बार बात बिगड़ जाने पर बात सँवारने के लिए लाखों जतन करने पड़ते हैं। नवें दोहे में छोटों की उपयोगिता व महत्त्व को दर्शाते हुए कहा है कि बड़ों के सामने छोटों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। दसवें दोहे में—मुसीबत के समय व्यक्ति की अपनी ही सम्पत्ति काम आती है। ग्यारहवें दोहे में पानी के महत्त्व को बताते हुए पानी के तीन रूप पानी, चमक व सम्मान इन तीनों का जीवन में महत्त्व बताया है।

शब्दार्थ

चटकाय—झटके से तोड़ना; गोय—छिपाकर; अठिलैहैं—उपहास करना; कोय—कोई; साधे—साधने पर; मूलहिं—जड़ को; अद्याय—तृप्त होना; सींचिबो—सिंचाई करने से; विपदा—मुसीबत; रमि—रमना (रहना); दीरघ—लम्बा, गहरा; आहिं—होते हैं; जाहिं—जाता है; सिमिटि—सिमटकर; धनि—धन्य है; पंक—कीचड़; लघु जिय—छोटे जीव-जन्तु; उदधि—समुद्र; बडाई—बढ़प्पन; नाद—आवाज़; रीझि—मुग्ध होकर; हेत—प्रेम; कछू—कुछ; बिगरी बात—बिगड़ी हुई बात; मथे—मथना; डारि—डालना, छोड़ना; तरवारि—तलवार, कृपाण; सहाय—सहायक, मददगार; जलज—कमल का फूल; रवि—सूरज; पानी—सम्मान, पानी।

अध्याय — 3 गीत-अतीत

—रामधारी सिंह 'दिनकर'

कवि परिचय

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह का जन्म 30 सितम्बर 1908 को बिहार के मुंगेर जिले के सिमरियाँ नामक गाँव में एक कृषक परिवार में हुआ था। दिनकर जी जब दो वर्ष के थे, तब इनके पिता का निधन हो गया था। माता ने ही इनका पालन पोषण किया था। मैट्रिक में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने पर इन्हें 'भूदेव स्वर्णपदक' मिला। इन्होंने बी.ए. (ऑनर्स) करने के बाद अध्यापन का कार्य आरम्भ किया। तथा ये 1950 में स्नातकोत्तर महाविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष बने। सन् 1952 में राज्यसभा के सदस्य मनोनीत किए गए। भारत सरकार

ने इन्हें 'पद्मभूषण' अलंकरण से भी अलंकृत किया। दिनकर जी को 'संस्कृति के चार अध्याय' पुस्तक पर साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। दिनकर जी की काव्यकृति 'उर्वशी' के लिए उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

दिनकर जी ने गद्य व पद्य दोनों में विशेष ख्याति प्राप्त की। हुँकार, कुरुक्षेत्र, रश्मिस्थी, परशुराम की प्रतीक्षा, उर्वशी और संस्कृति के चार अध्याय आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। दिनकर ओज के कवि माने जाते हैं। इनकी भाषा अत्यन्त प्रवाहपूर्ण, ओजस्वी और सरल है। दिनकर जी की सबसे बड़ी विशेषता उनकी अपने देश और युग के सत्य के प्रति सजगता है एवं 24 अप्रैल सन् 1974 को दिनकर जी का निधन हो गया।

कविता का सारांश

प्रस्तुत कविता हिन्दी साहित्य के अति महान कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित है। उन्होंने इस कविता में प्रकृति के मनोहारी तथा आकर्षक सौंदर्य के अतिरिक्त जीव-जंतुओं के महत्व, धरती के कण-कण में विद्यमान संगीत आदि का बड़ा ही सजीव वर्णन किया है। इसलिए कवि को नदी की कल-कल में, शुक-शुकी के क्रिया-कलापों में 'आल्हा' गाता ग्वाल बाल आदि सभी संगीत में लीन दिखाई देते हैं। कवि का मानना है कि नदी और शुक गीत का सृजन बेशक न करें, पर दोनों में गीत का सृजन और गान भी हो रहा है पर कवि की दुविधा यह है कि नदी और शुक का अगीत सुंदर है या ग्वाल बाल द्वारा सस्वर गाया जा रहा गीत सुंदर है। वास्तव में प्रकृति के कण-कण में ही संगीत का अनुभव करना इस कविता का प्रतिपाद्य है।

शब्दार्थ

तटिनी—नदी; अगीत—जिसे गाया नहीं गया; उपलों—किनारों से; पाटल—गुलाब; निर्झरी—झरना; वेग—गति; बिधना—भाग्य, विधाता; शुकी—मादा तोता; खोंता—घोंसला; पर्ण—पत्ता; गुनती—सोचती; कड़ी—वे छन्द जो गीत को जोड़ते हैं; अंतर—हृदय; विरह—वियोग;

अध्याय — 4 अग्निपथ

—हरिवंशराय बच्चन

कवि-परिचय

हरिवंश राय बच्चन का जन्म 27 नवम्बर सन् 1907 को उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद शहर में हुआ। माता-पिता प्यार से इन्हें 'बच्चन' बुलाते थे जिसे बाद में इन्होंने अपना उपनाम बना लिया। बच्चन विश्वविद्यालय में प्राध्यापक के पद पर कार्य करने लगे लेकिन कुछ समय बाद ही ये भारतीय विदेश सेवा में चले गए। जहाँ रहकर इन्हें कई देशों में घूमते हुए मंच पर ओजस्वी वाणी में काव्यपाठ करने के लिए प्रसिद्धि मिली। बच्चन जी को साहित्य अकादमी पुरस्कार, सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार और सरस्वती सम्मान से सम्मानित किया गया।

इनकी प्रमुख रचनाएँ मधुशाला, निशा-निमंत्रण, एकांत संगीत, टूटती चट्टानें मिलन यामिनी, रूप तरंगिणी, आरती और अंगारे, नीड़ का निर्माण फिर-फिर (सभी कविता संग्रह) और आत्मकथा के चार खंड; क्या भूलूँ क्या याद करूँ, बसेरे से दूर, दशद्वार से सोपान तक आदि हैं। बच्चन जी की कविताएँ सहज और संवेदनशील हैं। इनकी रचनाओं में व्यक्त वेदना, राष्ट्रचेतना, और जीवनदर्शन प्रमुखता से दिखाई देते हैं। इन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से राजनैतिक जीवन के ढोंग, सामाजिक असमानता और कुरीतियों पर व्यंग्य किया। बच्चन जी द्वारा लिखित आत्मकथा हिन्दी गद्य की बेजोड़ कृति हैं।

सन् 2003 में हरिवंश राय जी का निधन हो गया।

कविता का सारांश

प्रस्तुत कविता में कवि ने मनुष्य के संघर्षमयी जीवन को अग्निपथ कहा है। उन्होंने इस कविता में कहा है कि अग्निपथ पर बढ़ते हुए मनुष्य को राह में सुख की चाह न कर, बिना रुके, बिना विश्राम किए अपनी मंजिल की ओर कर्मठतापूर्वक बढ़ते ही जाना चाहिए। कवि ने शब्दों की पुनरावृत्ति द्वारा मनुष्य को अपनी दृढ़ता पर डटे रहने तथा बिना विचलित हुए अपनी राह पर अग्रसर होने की प्रेरणा दी है। अर्थात् यह जीवन फूलों की नहीं, बल्कि काँटों की शय्या है, जिस पर मनुष्य को हर प्रतिकूल परिस्थिति का सामना करते हुए, बिना पीछे मुड़े अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहिए। ऐसी बातों को दर्शाना ही इस कविता का मूल मंत्र है।

शब्दार्थ

अग्निपथ—बहुत ही कठिन मार्ग; लथपथ—सना हुआ; स्वेद—पसीना; पत्र—पत्ता; रक्त—खून; शपथ—कसम; अश्रु—आँसू।

अध्याय — 5 (i) नए इलाके में

—अरुण कमल

कवि-परिचय

अरुण कमल का जन्म 15 फरवरी सन् 1954 को बिहार के रोहतास जिले के नासरीगंज इलाके में हुआ था। वर्तमान समय में ये पटना विश्व-विद्यालय में प्राध्यापक के पद पर कार्यरत हैं। इनकी कविताओं के लिए इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार सहित कई अन्य पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया है।

इनकी प्रमुख रचनाएँ 'अपनी केवल धार', 'पुतली में संसार', सबूत, नए इलाके में (कविता संग्रह) तथा कविता और समय (आलोचनात्मक कृति) आदि हैं। इन्होंने कविता लेखन के साथ-साथ कई पुस्तकों और रचनाओं का अनुवाद भी किया। जिनमें मायकोव्स्की की आत्मकथा और जंगल बुक का हिन्दी में अनुवाद प्रमुख है। अरुण कमल जी ने हिन्दी के युवा कवियों की कविताओं का अंग्रेज़ी में भी अनुवाद किया जो 'बॉयसेज' के नाम से प्रकाशित हुआ।

इन्होंने अपनी कविताओं में आपबीती और जगबीती के साथ जीवन के विविध क्षेत्रों का चित्रण किया। इन्होंने वर्तमान शोषण व्यवस्था के खिलाफ आक्रोश, नफरत का वर्णन किया तथा एक नई मानवीय व्यवस्था के निर्माण का प्रयास किया।

कविता का सारांश

प्रस्तुत कविता 'नए इलाके में' कवि अरुण कमल द्वारा रचित है। इस कविता में कवि ने दुनिया के अस्थायी रूप का वर्णन किया है। शहरीकरण के कारण जीवन-यापन में नए-नए परिवर्तन आ रहे हैं। लेकिन जो आज नया है वही कल पुराना पड़ रहा है। पुरानी पहचान के अर्थ ही बदल गए हैं। अपने मंजिल रूपी घर तक भी पुरानी स्मृति के निशानों के सहारे नहीं पहुँचा जा सकता है, क्योंकि नित्य नए-नए निर्माण कार्य हो रहे हैं, प्रगति रूपी शहरीकरण के कारण पुराने स्मृति चिह्न कहीं खो जाते हैं। मनुष्य के पास समय कम है, परन्तु उसकी गति बहुत तेज़ है। घर के सही पते के लिए कोई पहचान वाला चाहिए। अर्थात् जीवन में स्थायी कुछ भी नहीं है, क्योंकि हर पल बनती बिगड़ती दुनिया में स्मृतियों के भरोसे जी नहीं सकते। ऐसी बातों को दर्शाना ही इस कविता का प्रतिपाद्य है।

शब्दार्थ

ढहा—गिरा; इलाका—क्षेत्र; ताकता—देखता; ठकमकाता—डगमगाता हुआ या धीरे-धीरे; स्मृति—यादें; घट—घटित होना; अकास—आसमान।

अध्याय — 5 (ii) खुशबू रचते हैं हाथ

—अरुण कमल

कविता का सारांश

प्रस्तुत कविता कवि अरुण कमल द्वारा रचित है। इस कविता में कवि ने सामाजिक विषमताओं का पर्दाफाश किया है। यह कैसी विडंबना है कि जो वर्ग समाज के लिए सौंदर्य की सृष्टि करता है तथा उसे खुशहाल बनाता है, वही वर्ग अभावों में, अत्यधिक गंदगी भरे माहौल में अपना जीवन-यापन करता है। देश की मशहूर अगरबत्तियों का निर्माण करने वाले हाथ दयनीय, शोचनीय, भयावह परिस्थितियों में रहने को विवश हैं। सुगंध बिखेरने वाले ये लोग समाज में उपेक्षित हैं। ऐसी ही बातों को दर्शाकर कवि ने सरकार, समाज आदि को झकझोरा है, उनके सही कर्तव्य को चेताया है। यही इस कविता का मुख्य उद्देश्य है।

शब्दार्थ

टोला—बस्ती; मशहूर—प्रसिद्ध; खस—पोस्ता; जख्म—घाव।

पूरक पाठ्य-पुस्तक संचयन भाग-1

अध्याय — 1 गिल्लू

— महादेवी वर्मा

लेखिका-परिचय

श्रीमती महादेवी वर्मा आधुनिक युग की प्रसिद्ध कवयित्री एवं गद्य लेखिका मानी जाती हैं। उन्हें आधुनिक युग की मीरा कहा जाता है। महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 ई. में उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद जिले में हुआ। उन्होंने सन् 1932 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की और प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्राचार्या से कुलपति बन गईं। सन् 1987 ई. में उनका निधन हो गया।

महादेवी वर्मा को भारत सरकार ने पद्मभूषण व भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया तथा कुमायूँ और दिल्ली विश्वविद्यालय ने उन्हें डी. लिट् की मानद उपाधि से विभूषित किया।

शृंखला की कड़ियाँ, स्मृति की रेखाएँ, क्षणदा, मेरा परिवार, अतीत के चलचित्र आदि उनकी प्रमुख गद्य रचनाएँ हैं वहीं नीहार, नीरजा, रश्मि, यामा, दीपशिखा आदि उनकी प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं।

महादेवी वर्मा ने जहाँ एक तरफ दीन-दुःखियों का मार्मिक चित्रण किया वहीं दूसरी ओर निरीह पशु-पक्षियों का भी हृदयस्पर्शी वर्णन किया।

पाठ का सार

'गिल्लू' महादेवी वर्मा द्वारा रचित मार्मिक संस्मरण है। लेखिका सोनजुही बेल में लगी पीली-पीली कलियों को देखकर छोटे से प्राणी गिल्लू की यादों में खो जाती हैं। वह कभी सोनजुही लता की हरियाली में छिप जाता था तो कभी अचानक लेखिका के कंधे पर कूदकर बैठ जाता था तो लेखिका चौंक जाती थीं। लेखिका पहले सोनजुही की कली को खोजती फिरती थीं परंतु उन्हें अब गिल्लू की याद आती है जो अब नहीं है। लेखिका को पशु-पक्षियों से बहुत प्रेम था। लेखिका ने एक दिन देखा कि दो कौए एक गमले के चारों ओर छुआ-छुआवल जैसा खेल, खेल रहे हैं। अचानक लेखिका ने गमले से चिपके एक छोटे से गिलहरी के बच्चे को देखा। कौए उसे खाना चाहते थे। उन्होंने उसे अपनी चोंच से घायल कर दिया था जिससे वह मरे हुए के समान हो गया था। लेखिका ने उसे उठाया और घर के अन्दर ले गई तथा इलाज किया, उसे मरहम लगाई तथा उसके मुँह में पानी की बूँदें टपकाईं। तीन दिन बाद वह लेखिका की उँगली पर बैठकर इधर-उधर देखने लगा।

तीन-चार महीने बाद उस गिलहरी के बच्चे के चिकने बाल, गुच्छेदार पूँछ और नीली मोती-सी आँखें सभी को आकर्षित करने लगीं। अब सभी उसको गिल्लू कहकर पुकारने लगे। उसके रहने के लिए फूलों वाली छोटी-सी टोकरी में रुई बिछाकर खिड़की पर लटका दिया जाता था जिसमें वह दो वर्ष तक रहा। वह मोतियों जैसी आँखों से बाहर-भीतर सब कुछ देखता रहता। वह बहुत समझदार था। जब लेखिका लिखने बैठती तो वह पैरों तक आकर खिड़की के पर्दे पर सर से चढ़ जाता। कभी-कभी लेखिका उसे पकड़ कर एक लिफाफे में रख देती तो वह घण्टों लेखिका के कार्यों को देखता रहता था।

गिल्लू के जीवन का पहला वसंत आया तो नीम-चमेली की सुगंध कमरे में आने लगी। बाहरी गिलहरियाँ खिड़की की जाली से उसे देखतीं, गिल्लू भी बाहर झाँकता। लेखिका ने उसे मुक्त करने के लिए जाली का एक कोना खोल दिया। गिल्लू बाहर निकलकर खुश हो गया परंतु जब लेखिका कॉलेज से लौटकर कमरा खोलती तो वह जाली के द्वार से अंदर आकर दौड़ने लगता।

लेखिका जैसे ही खाने के कमरे में पहुँचती गिल्लू मेज़ पर पहुँच जाता और थाली के पास बैठकर एक-एक चावल बड़ी सफाई से खाता रहता था। काजू उसे बहुत प्रिय थे।

एक बार लेखिका को मोटर दुर्घटना में घायल होने पर अस्पताल में रहना पड़ा। गिल्लू कमरे में झूले से उतर कर दौड़ लगाता रहता था। लोग काजू दे जाते थे परंतु वह उन्हें नहीं खाता था और झूले में छिपा देता था, जब झूले की सफाई की गई तो बहुत से काजू निकले।

गिलहरी का जीवन लगभग दो साल होता है। अब उसका अंत निकट आ गया था। उसने दिन भर कुछ नहीं खाया और न बाहर गया। रात को झूले से निकलकर लेखिका के बिस्तर पर आया और अंगुली पकड़कर हाथ से चिपक गया, जैसे बचपन में मरणासन्न हालत में उसने अंगुली पकड़ी थी। उसे बचाने के काफी प्रयास किए गए, परन्तु सुबह होते-होते ही उसके जीवन का अंत हो गया।

शब्दार्थ

सोनजुही—जूही (फूल) का एक प्रकार, जो पीला होता है; स्निग्ध—चिकना; खाद्य—खाने-योग्य; पीताभ—पीले रंग का; लघुप्राण—छोटा जीव; हरीतिमा—हरियाली; अनायास—अचानक; छुआ-छुआवल—चुपके से छूकर छुप जाना और फिर छूना; समादरित—विशेष आदर; अनादरित—तिरस्कार; अवतीर्ण—प्रकट होना; कर्कश—कटु; काकद्वय—दो कौए; निश्चेष्ट—बिना किसी हरकत के; आश्वस्त—निश्चित; लघुगात—छोटा शरीर; परिचारिका—सेविका; मरणासन्न—जिसकी मृत्यु निकट हो; उष्णता—गरमी।

अध्याय — 2 स्मृति

—श्रीराम शर्मा

लेखक-परिचय

अनोखी प्रतिभा से सम्पन्न पं. श्रीराम शर्मा का जन्म सन् 1896 ई. को हुआ। इन्होंने प्रारंभिक जीवन में अध्यापन का कार्य किया। बाद में राष्ट्रसेवा व साहित्य सेवा में जुट गए। इन्होंने शिकार-साहित्य के द्वारा हिन्दी के साहित्यिक क्षेत्र में नाम कमाया तथा गद्य की एक नयी विधा 'रेखाचित्र' का प्रारम्भ किया। विशाल भारत के संपादक के रूप में संपादन क्षेत्र में भी ख्याति अर्जित की। इनकी हृदयस्पर्शी रचनाएँ पाठकों को मंत्रमुग्ध कर देती हैं। सन् 1967 में इनका देहान्त हो गया। शिकार, बोलती प्रतिभा, जंगल के जीव, सेवाग्राम की डायरी, सन् 1942 के संस्मरण आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

पाठ का सार

सन् 1908 की बात है। सर्दियों के दिन थे। सायंकाल के समय कई साथियों के साथ लेखक झरबेरी के बेर तोड़-तोड़कर खा रहा था, तभी गाँव के पास से एक आदमी ने पुकारा कि तुम्हारे भाई बुला रहे हैं। भाई साहब की मार का डर था, समझ में नहीं आ रहा था कि कौन-सा कसूर बन पड़ा। डरते-डरते घर में घुसा पर आँगन में भाई साहब पत्र लिख रहे थे। भाई साहब ने पत्रों को ले जाकर मक्खनपुर डाकखाने में डाल आने को कहा।

लेखक अपने छोटे भाई के साथ अपना डंडा लेकर घर से निकल पड़ा। मक्खनपुर के स्कूल और गाँव के बीच पड़ने वाले आम के पेड़ों से प्रति वर्ष आम डंडे से झूरे जाते थे। चिट्ठियों को उसने टोपी में रख लिया, क्योंकि कुएँ में जेबें न थीं और मक्खनपुर की ओर तेज़ी से चलते हुए दोनों, गाँव से चार फर्लांग दूर उस कुएँ के पास आ गए जिसमें एक अति भयंकर काला साँप पड़ा हुआ था। कुआँ कच्चा था, और चौबीस हाथ गहरा था। उसमें पानी न था। एक दिन जब स्कूल से लौट रहे थे कि कुएँ में उल्लकने की सूझी। झाँककर एक ढेला फेंका कि साँप की आवाज़ कैसी होती है? कुएँ में ज्यों ही ढेला गिरा त्यों ही एक फुँकार सुनाई पड़ी तब उन्हें ज्ञात हुआ कि कुएँ में साँप है और उन्होंने उसकी क्रोधपूर्ण फुँकार पर कहकहे लगाए।

गाँव से मक्खनपुर जाते और मक्खनपुर से लौटते समय प्रायः प्रतिदिन ही कुएँ में ढेले डाले जाते थे। जैसे ही वे दोनों उस कुएँ की ओर से निकले, तो कुएँ में ढेला फेंककर फुँकार सुनने की इच्छा जाग्रत हो गई। कुएँ के किनारे से एक ढेला उठाया और उछलकर एक हाथ से टोपी उतारते हुए साँप पर ढेला गिरा दिया। टोपी के हाथ में लेते ही तीनों चिट्ठियों चक्कर काटती हुई कुएँ में गिर रही थीं। चिट्ठियों के टोपी से निकलते ही लेखक की जान निकल गई।

कुएँ की पाट पर बैठे वे दोनों पिटने के भय से रोते ही जा रहे थे। माँ की गोद की याद आने लगी, कि माँ आकर छाती से लगा ले और लाड़-प्यार करके कह दे कि कोई बात नहीं चिट्ठियाँ फिर लिख ली जाएँगी। घर लौटकर सच बोलने पर रूई की तरह धुनाई होती। पिटने के भय और झूठ बोलकर चिट्ठियों के न पहुँचने की ज़िम्मेदारी के बोझ से दबा लेखक बैठा सिसक रहा था। लेखक ने कुएँ में घुसकर चिट्ठियों को निकालने का निश्चय किया। यह भयंकर निर्णय था। उस समय चिट्ठियाँ निकालने के लिये वह विषधर से भिड़ने को तैयार हो गया।

छोटा भाई रो रहा था। उसके रोने का मतलब था कि लेखक की मौत उसे नीचे बुला रही है। छोटा भाई भी निर्वस्त्र हुआ। पाँच धोतियाँ और कुछ रस्सों मिलाकर कुएँ की गहराई के लिये काफी हुई। धोतियाँ एक-दूसरे से बाँधीं और खूब खींच-खींचकर देखा कि गाँठें कड़ी हैं या नहीं। धोती के एक सिरे पर डंडा बाँधा और उसे कुएँ में डाल दिया। दूसरे सिरे को डेंग के चारों ओर एक चक्कर देकर और एक गाँठ लगाकर छोटे भाई को दे दिया। छोटा भाई केवल आठ वर्ष का था। लेखक कुएँ में धोती के सहारे नीचे उतरने लगा। कुएँ में नीचे उतरते समय लेखक को साँप का तनिक भी भय न था। कुएँ के धरातल से जब चार-पाँच गज रहा होगा, साँप फन फैलाए धरातल से एक हाथ ऊपर उठा हुआ लहरा रहा था। पूँछ का भाग पृथ्वी पर था। लेखक को नीचे उतरते देख साँप घातक चोट के आसन पर बैठा था। धोती कुएँ के बीचों-बीच लटक रही थी। लेखक कुएँ में साँप से अधिक से अधिक चार फुट की दूरी पर ही रह सकता था। ऊपर से लटककर तो साँप नहीं मारा जा सकता था। वह धीरे-धीरे नीचे उतरने लगा। दोनों हाथों से धोती पकड़े हुए उसने अपने पैर कुएँ की बगल में लगा दिए। दीवार से पैर लगाते ही कुछ

मिट्टी नीचे गिरी और साँप ने उस पर मुँह मारा। वह डेढ़ गज पर कुएँ के धरातल पर खड़ा हो गया। आँखें चार हुईं। साँप के फन की ओर लेखक की आँखें लगी हुई थीं कि वह कब और किस ओर को आक्रमण करता है? साँप ने मोहनी-सी डाल दी। वह लेखक के आक्रमण की प्रतीक्षा में था। डंडा चलाने के लिए स्थान ही न था। साँप को डंडे से दबाने का जोखिम भी नहीं उठा सकते थे। यदि फन या उसके समीप का भाग न दबा तो फिर वह पलटकर ज़रूर काटता और फन के पास दबाने की कोई सम्भावना भी होती तो फिर उसके पास पड़ी हुई दो चिट्ठियों को कैसे उठाता? दो चिट्ठियाँ उसके पास उससे सटी हुई पड़ी थीं और एक लेखक की ओर थी। उसने सोचा डंडे से साँप की ओर से चिट्ठियों को सरकाया जाये।

तत्पश्चात्, जैसे ही लेखक ने डंडे को साँप के दाईं ओर पड़ी चिट्ठी की ओर बढ़ाया तो साँप ने अपना विष डंडे पर ही छोड़ दिया। घबराहत

के मारे लेखक के हाथ से डंडा छूट गया। इसके बाद भी क्रोधित साँप ने डंडे के ऊपर लगातार दो-तीन प्रहार किए। साँप की फुँकार और लेखक के उछलने से लेखक के छोटे भाई को ऐसा प्रतीत हुआ कि लेखक को साँप ने डस लिया है। यह सोचकर लेखक के भाई की चीख निकल गई। लेखक ने डंडे को पुनः उठाकर चिट्ठियाँ उठाने का प्रयास किया, किंतु साँप ने फिर से वार किया। किंतु इस बार लेखक ने अपने हाथों से डंडा गिरने नहीं दिया। साँप डंडे पर गाँठ की भांति लिपट गया और जैसे ही साँप का पिछला भाग लेखक के हाथों से स्पर्श हुआ, लेखक ने फौरन डंडा पटक दिया। इसी उठा-पटक में लेखक व साँप दोनों का स्थान बदल गया। तभी लेखक ने तुरंत चिट्ठियों को उठाया और धोती के छोर में बाँध दिया जिन्हें छोटे भाई ने उन्हें ऊपर खींच लिया।

साँप के पास गिरे हुए डंडे को उठाने में लेखक को काफ़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा। कुएँ की बगल से एक मुट्ठी मिट्टी लेकर लेखक ने साँप के दाईं ओर फेंकी, जैसे ही साँप ने उस पर वार किया लेखक साँप की बाईं ओर से डंडा उठाने में सफल हो गया। कुएँ से निकलने के लिए लेखक ग्यारह वर्ष की उम्र में हाथों के बल 36 फुट ऊपर चढ़ा। उन दोनों ने वहाँ कुछ देर विश्राम किया और एक लड़के, जिसने लेखक को कुएँ से बाहर निकलते देखा था उसे किसी को न बताने को राज़ी किया।

10वीं की परीक्षा पास करने के बाद लेखक ने यह घटना माँ को सुनाई तब माँ ने उसे अपनी गोद में बैठकर आँचल में छिपा लिया।

शब्दार्थ

आखिर—अंतिम; चिल्ला जाड़ा—कड़ाके की सर्दी; आशंका—शंका से भरा; मज्जा—हड्डी के भीतर भरा मुलायम पदार्थ; झुरे—तोड़ना; प्रसन्नवदन—प्रसन्न चेहरा; उझकने—देखना; किलोल—क्रीड़ा; मृगशावक—हिरण का बच्चा; ढाढे मारकर रोना—जोर-जोर से रोना; उद्वेग—बेचैनी; दुधारी—दोनों तरफ से धार वाली; प्रतिद्वंद्वी—विपक्षी; चक्षुःश्रवा—आँख से सुनने वाला; पैतरे—मुद्रा; अवलंबन—सहारा; कायल—मानने वाला; गुंजलक—कुंडलित; ताकीद—बार चेताने की क्रिया; डैने—पंख।

अध्याय — 3 कल्लू कुम्हार की उनाकोटी

—क. विक्रम सिंह

लेखक-परिचय

क. विक्रम सिंह का जन्म सन् 1938 ई. में हुआ। इन्होंने जीवन में अध्यापन कार्य करने के पश्चात् सूचना व प्रसारण मंत्रालय में निदेशक के पद पर कार्य किया। टेलीविज़न व सिनेमा से विशेष लगाव के कारण इन्होंने अपने पद से त्याग पत्र दे दिया। इन्होंने 'तर्पण' नामक फिल्म का निर्माण किया तथा कई वृत्तचित्र भी बनाये। इन्होंने फिल्मों में निर्देशन का कार्य भी किया। यद्यपि विकास, पर्यावरण देशाटन आदि में इनकी दिलचस्पी थी। वर्तमान में जनसत्ता नामक समाचार पत्र में स्तम्भ लेखन कार्य से जुड़े हुये हैं।

पाठ का सार

भारत के उत्तर-पूर्वी सीमांत में त्रिपुरा नामक छोटा-सा राज्य है जिसकी सीमा बांग्लादेश से तीन ओर से सटी है। यहाँ जनसंख्या वृद्धि दर अधिक है। बांग्लादेश से भी लोग आ जाते हैं। लेखक एक टी. वी. सीरियल की शूटिंग के लिए त्रिपुरा गया। अगरतला के बाद ही टीलियापुरा में उसकी भेंट हेमंत और मंजू नामक दो लोक गायकों से हुई। यहाँ से अशांत क्षेत्र में जाने के लिये उसे सी. आर. पी. एफ. के सुरक्षा बलों के साथ जाना पड़ा। यहाँ घात लगाये विद्रोही दिन दहाड़े हत्या कर देते हैं।

त्रिपुरा की प्रमुख नदियों में से एक मनु नदी के किनारे स्थित मनु एक छोटा-सा कस्बा है। जिस वक्त वे मनु नदी के पार जाने वाले पुल पर पहुँचे, सूर्य मनु के जल में अपना सोना उँडेल रहा था। एक साथ बँधे हजारों बाँसों का एक काफिला किसी विशाल ड़ैगन जैसा दिख रहा था और नदी पर बहा चला आ रहा था। डूबते सूरज की सुनहरी रोशनी उसे सुलगा रही थी और हमारे काफिले को सुरक्षा दे रही सी. आर. पी. एफ. की एक समूची कम्पनी के उलट इसकी सुरक्षा सिर्फ चार व्यक्ति सँभाले हुए थे।

त्रिपुरा के उत्तरी जिले की लोकप्रिय घरेलू गतिविधियों में से एक है अगरबत्तियों के लिये बाँस की पतली सीकें तैयार करना। अगरबत्तियाँ बनाने के लिये इन्हें कर्नाटक और गुजरात भेजा जाता है। उत्तरी जिले का मुख्यालय कैलाश शहर है, जो बांग्लादेश की सीमा के काफी करीब है।

लेखक यहाँ के जिलाधिकारी से मिला, जो केरल से आये तेजतर्रार, मिलनसार और उत्साही व्यक्ति थे। उन्होंने बताया कि टी.पी.एस. (टरू पोटेटो सीड्स) की खेती को त्रिपुरा में, खासकर उत्तरी जिले में किस तरह सफलता मिली है। आलू की बुआई के लिये आमतौर पर पारम्परिक आलू के बीजों की ज़रूरत दो मीट्रिक टन प्रति हेक्टेयर पड़ती है। इसके विपरीत टी. पी. एस. की सिर्फ 100 ग्राम मात्रा ही एक हेक्टेयर की बुआई के लिये काफी होती है। त्रिपुरा से टी. पी. एस. का निर्यात अब न सिर्फ असम, मिजोरम, नागालैण्ड और अरुणाचल प्रदेश को बल्कि बांग्लादेश, मलेशिया और वियतनाम को भी किया जा रहा है।

अगले दिन जिलाधिकारी ने सारे सुरक्षा इंतजाम किये और यहाँ तक कि उनाकोटी में ही हमें लंच करने का प्रस्ताव भी रखा। वहाँ सुबह नौ बजे के आस-पास पहुँच गये लेकिन एक घंटे इन्तजार करना पड़ा, क्योंकि खास ऊँचे पहाड़ों से घिरी होने के चलते इस जगह सूरज की रोशनी दस बजे ही पहुँच पाती है।

कैलाश शहर के जिलाधिकारी के साथ हम उनाकोटी गये। उनाकोटि का अर्थ है—करोड़ से एक कम। यहाँ शिव की करोड़ से एक कम मूर्तियाँ हैं।

स्थानीय आदिवासियों का मानना है कि इन मूर्तियों का निर्माता कल्लू कुम्हार था। वह पार्वती का भक्त था और शिव-पार्वती के साथ उनके निवास कैलाश पर्वत पर जाना चाहता था। पार्वती के जोर देने पर शिव कल्लू को कैलाश ले चलने को तैयार हो गये लेकिन इसके लिये शर्त यह रखी कि उसे एक रात में शिव की एक कोटि मूर्तियाँ बनानी होंगी। कल्लू अपनी धुन के पक्के व्यक्ति की तरह इस काम में जुट गया लेकिन जब भोर हुई तो मूर्तियाँ एक कोटि से कम निकलीं। कल्लू नाम की इस मुसीबत से पीछा छुड़ाने पर अड़े शिव ने इसी बात को बहाना बनाते हुए कल्लू कुम्हार को अपनी मूर्तियों के साथ उनाकोटि में ही छोड़ दिया और चलते बने।

विद्वानों का मानना है कि यह जगह दस वर्ग किलोमीटर से कुछ ज्यादा इलाके में फैली हुई है और पाल शासन के दौरान नवीं से बारहवीं सदी तक के तीन सौ वर्षों में यहाँ चहल-पहल रहा करती थी।

पहाड़ों को अन्दर से काटकर यहाँ विशाल आधार-मूर्तियाँ बनी हैं। एक विशाल चट्टान ऋषि भागीरथ की प्रार्थना पर स्वर्ग से पृथ्वी पर गंगा के अवतरण के मिथक को चित्रित करती है। गंगा अवतरण के धक्के से कहीं पृथ्वी धँसकर पाताल लोक में न चली जाए, लिहाजा, शिव को इसके लिए तैयार किया गया कि वे गंगा को अपनी जटाओं में उलझा लें। इसके बाद इसे धीरे-धीरे पृथ्वी पर बहने दें। शिव का चेहरा एक समूची चट्टान पर बना हुआ है और उनकी जटाएँ दो पहाड़ों की चोटियों पर फैली हैं। भारत में शिव की यह सबसे बड़ी आधार-मूर्ति है। पूरे साल बहने वाला एक जल प्रपात पहाड़ों से उतरता है जिसे गंगा जितना ही पवित्र माना जाता है।

इस जगह की शूटिंग पूरी करते समय चार बज गए। सूर्य के ऊँचे पहाड़ों के पीछे जाते ही उनाकोटि में अचानक भयानक अन्धकार छा गया। मिनटों में जाने कहीं से बादल भी घिर आए। जब तक हमने अपने उपकरण समेटे, बादलों की सेना गर्जन-तर्जन के साथ कहर बरसाने लगी। शिव का तांडव शुरू हो गया था जो कुछ-कुछ वैसा ही था, जैसा मैंने तीन साल बाद जाड़े की एक सुबह दिल्ली में देखा और जिसने मुझे एक बार फिर उनाकोटि पहुँचा दिया था।

शब्दार्थ

सोहबत—संगत; **ऊर्जादायी**—शक्तिदायक; **कानफाड़**—तेज़ आवाज जो कान फोडा हो; **विक्षिप्तों**—पागलों; **तडित**—बिजली; **हस्तांतरण**—एक व्यक्ति के हाथ से दूसरे व्यक्ति के हाथ में जाना; **प्रतीकित**—अभिव्यक्त करना; **दंतकथा**—लोगों में प्रचलित कहानी; **कोटि**—करोड़; **शब्दशः**—प्रत्येक शब्द के अनुसार; **मिथक**—पौराणिककथा।

अध्याय — 4 मेरा छोटा-सा निजी पुस्तकालय

—धर्मवीर भारती

लेखक-परिचय

हिन्दी के प्रसिद्ध कवि, कथाकार, नाटककार व पत्रकार डॉ. धर्मवीर भारती का जन्म सन् 1926 ई. में हुआ। उन्होंने अपनी रचनाओं में सामाजिक व मनोवैज्ञानिक समस्याओं को जीवन्त रूप में प्रस्तुत किया। भारती जी ने समाज की विषमताओं पर भी करारा व्यंग्य किया। उनके साहित्य में बुद्धि और हृदय दोनों तत्वों का समावेश दिखाई देता है।

भारती जी की प्रमुख रचनाएँ—सौंस की कलम से, सूरज का सातवाँ घोड़ा, अंधा युग, कहनी अनकहनी, मेरी वाणी गैरिक बसना, कनुप्रिया, ठंडा लोहा, बंदगली का आखिरी मकान, गुनाहों का देवता आदि प्रमुख हैं। इन्हें भारत सरकार द्वारा हिन्दी साहित्य में उत्कृष्ट योगदान के लिए पद्मश्री की उपाधि से भी विभूषित किया गया था। सन् 1997 में धर्मवीर भारती जी का निधन हो गया।

पाठ का सार

प्रस्तुत पाठ लेखक धर्मवीर भारती द्वारा लिखित है। इस पाठ में लेखक ने अपने पुस्तकों के प्रति प्रेम और लगाव को अभिव्यक्त किया है। लेखक के बचपन में उसके घर में बहुत-सी पत्र-पत्रिकाएँ आती थीं। उसे बचपन से ही पुस्तकें पढ़ने तथा सहेजने का शौक लग गया था। उसे अपना छोटा-सा निजी पुस्तकालय बनाने की प्रेरणा कैसे मिली तथा उसने अपनी पहली पुस्तक कब खरीदी, अपनी बीमारी के समय अपना पुस्तकालय रचना तथा रचनाकारों के कारण भरा-भरा सा लगता था, आदि बातों को बड़ी ही सूक्ष्मता एवं निपुणता से उभारा गया है, दर्शाया गया है।

जुलाई 1989 में लेखक को तीन-तीन जबरदस्त हार्ट-अटैक पड़े थे और 60 प्रतिशत हार्ट सदा के लिए नष्ट हो गया था। अधमरी हालत में ही उन्हें घर लाया जाता है तो लेखक ज़िद करता है कि उसे किताबों वाले कमरे में रखा जाए। लेखक के पास हजारों किताबें जमा थीं। बचपन में कथाओं में हम सभी पढ़ा करते थे कि राजा के प्राण तोते में रहते हैं, वैसे ही लगता था

कि लेखक के प्राण उस शरीर से निकल चुके थे और वे ही प्राण इन किताबों में बसे थे, जो पिछले चालीस-पचास बरस में धीरे-धीरे उनके पास जमा होती गई थीं। किताबें पढ़ने व सहेजने का शौक तो लेखक को बचपन से ही था। कक्षा 5वीं में प्रथम आने पर उन्हें स्कूल से इनाम में दो अंग्रेज़ी की किताबें मिली थीं। इन दो किताबों ने एक नई दुनिया के द्वार लेखक के लिए खोल दिए।

यहाँ से आरम्भ हुई थी लेखक की लाइब्रेरी। लेखक स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय गए, डॉक्टरेट हासिल की। इसके साथ लेखक की लाइब्रेरी का भी विस्तार होता गया। पिता की मृत्यु के बाद लेखक ने आर्थिक संकट का सामना करते हुए अपनी पढ़ाई जारी रखी थी। लेखक की पुस्तकों का संकलन था—हिंदी, अंग्रेज़ी के उपन्यास, नाटक, कथा संकलन, जीवनीयों, संस्मरण, इतिहास, कला, पुरातत्व, राजनीति की सहस्रों पुस्तकें। रेनर मारिया रिल्के, स्टीफ़ेन ज़्वीग, मोपासा, चेखव, टॉलस्टाय, दास्तोवस्की, स्टीफेन स्पेंडर, हेब्लर, हुसेन तथा हिंदी में कबीर, तुलसी, सूर, रसखान, जायसी, प्रेमचंद, पंत, निराला, महादेवी वर्मा, जाने कितने लेखकों, चिंतकों की इन कृतियों के बीच लेखक अपने को भरा-भरा महसूस करते थे। लेखक का ऑपरेशन संभव होने के बाद मराठी के प्रसिद्ध कवि विंदा करंदीकर ने सच ही कहा था कि उन्होंने महापुरुषों के आशीर्वाद से पुनर्जीवन पाया है।

शब्दार्थ

अभिव्यक्त—विस्तार से किया गया वर्णन; संकलन—संग्रह; दिवसंगत—स्वर्गवास; आर्थिक कष्ट—धन से सम्बन्धित दुःख; धीरत—तसल्ली; आकर्षक—लुभावना; अभाव—कमी; सहसा—अचानक; विपन्न—गरीब; पुनर्जीवन—दुबारा जीवन का मिलना; अवरोध—रुकावट; रोचक—मनोरंजक; वरिष्ठ—बड़ा; कसक—पीड़ा; अदम्य—जिसे दबाया न जा सके; हजारहा—हजार से अधिक;

लेखन-खण्ड

अध्याय — 1 अनुच्छेद-लेखन



स्मरणीय बिंदु

- **अनुच्छेद लेखन**—एक विचार-बिन्दु जितने वाक्यों में लिखा जाता है, उस वाक्य समूह को अनुच्छेद कहते हैं। अनुच्छेद लेखन में एक ही परिच्छेद में प्रस्तुत विषय को सीमित कर दिया जाता है। इसमें निबन्ध की तरह प्रस्तावना, मध्य भाग व उपसंहार जैसे विभाजन नहीं होते। अनुच्छेद लिखते समय हमें निम्नलिखित बातों का अवश्य ध्यान रखना चाहिए—
 - अनुच्छेद लगभग 120 शब्दों में लिखना चाहिए।
 - अनुच्छेद का आरम्भ सीधे विषय से होना चाहिए।
 - वाक्य छोटे और आपस में जुड़े होने चाहिए।
 - भाषा सरल तथा सार्थक होनी चाहिए।
 - दिए गए संकेत बिन्दुओं को समझकर विषय को स्पष्ट करना चाहिए।

अध्याय — 2 पत्र-लेखन (अनौपचारिक)



स्मरणीय बिंदु

पत्र-लेखन की कला अत्यन्त प्राचीन है। मनुष्य के पठन-पाठन के साथ ही इस विद्या का प्रारम्भ हुआ था। पत्र वह संदेशवाहक दूत है, जो हमारे संदेश दूर बैठे परिचितों-अपरिचितों तक पहुँचाता है। इसके द्वारा मन की बात लिखकर विस्तार से प्रकट की जा सकती है। पत्र को अगर 'मन का आईना' कहा जाए जो अतिशयोक्ति न होगी। इसलिए आज के कम्प्यूटर युग में पत्र का हमारे जीवन में एक विशेष महत्त्व है। यद्यपि मोबाइल के चलन में आने से अब पत्र लेखन का चलन कम हो गया है फिर भी पत्रों की आवश्यकता हमें पड़ती ही है।

अच्छे पत्र की विशेषताएँ

वास्तव में पत्र लिखना भी एक कला है। इसलिए अच्छे पत्र में निम्नलिखित विशेषताओं का होना आवश्यक है—

- (1) पत्र की भाषा-शैली सरल हो।

(2) पत्र में संक्षिप्तता, क्रमबद्धता तथा प्रभावान्विति हो।

(3) पत्र में विनम्रता एवं बाह्य आकर्षण हो।

पत्रों के प्रकार

पत्रों को दो वर्गों में विभाजित किया जाता है—

(1) **अनौपचारिक अथवा पारिवारिक पत्र**—इसके अन्तर्गत परिवार के लोगों, मित्रों व निकट सम्बन्धियों को लिखे जाने वाले पत्र आते हैं।

(2) **औपचारिक अथवा कार्यालयी पत्र**—इसके अन्तर्गत आवेदन पत्र, कार्यालयी पत्र, संपादकीय पत्र, प्रार्थना पत्र तथा व्यावसायिक पत्र आदि आते हैं।

अध्याय — 3 चित्र वर्णन



स्मरणीय बिंदु

- ❑ लेखन कला में चित्र लेखन एक महत्वपूर्ण कला है। चित्र को ध्यान से देखने पर जो भाव अंतर्मन में उठते हैं उन्हें ही लेखनीबद्ध करना होता है।
- ❑ चित्र वर्णन के समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—
 - ♦ चित्र को कम से कम तीन-चार बार भली-भाँति देखना चाहिए ताकि उसके हर पहलू को अच्छी तरह समझा जा सके।
 - ♦ मन के भावों को क्रमबद्ध एवं सुसंगठित लिखना चाहिए।
 - ♦ भाषा सरल व स्पष्ट होनी चाहिए।
 - ♦ अनावश्यक विस्तार से बचना चाहिए।
 - ♦ लेखन संक्षिप्त लेकिन सटीक व प्रभावी होना चाहिए।

अध्याय — 4 संवाद लेखन



स्मरणीय बिंदु

संवाद का अभिप्राय बातचीत अथवा वार्तालाप से है। दो व्यक्तियों की बातचीत को ही संवाद कहा जाता है।

संवाद लेखन में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

- संवाद छोटे, सरल और संक्षिप्त होने चाहिए।
- संवाद की भाषा स्पष्ट, पात्रानुकूल व भावानुकूल होनी चाहिए।
- संवाद रोचक तथा सरल होने चाहिए।
- संवाद घटना, परिस्थिति व समयानुकूल होने चाहिए।
- संवाद लिखते समय उपयुक्त विराम-चिह्नों का उचित स्थान पर प्रयोग अवश्य करना चाहिए।
- पात्रों के मनोभावों को कोष्ठकों में लिखना चाहिए।